शंकरजी और हजरत आदम (अ.स.) में समानताएं

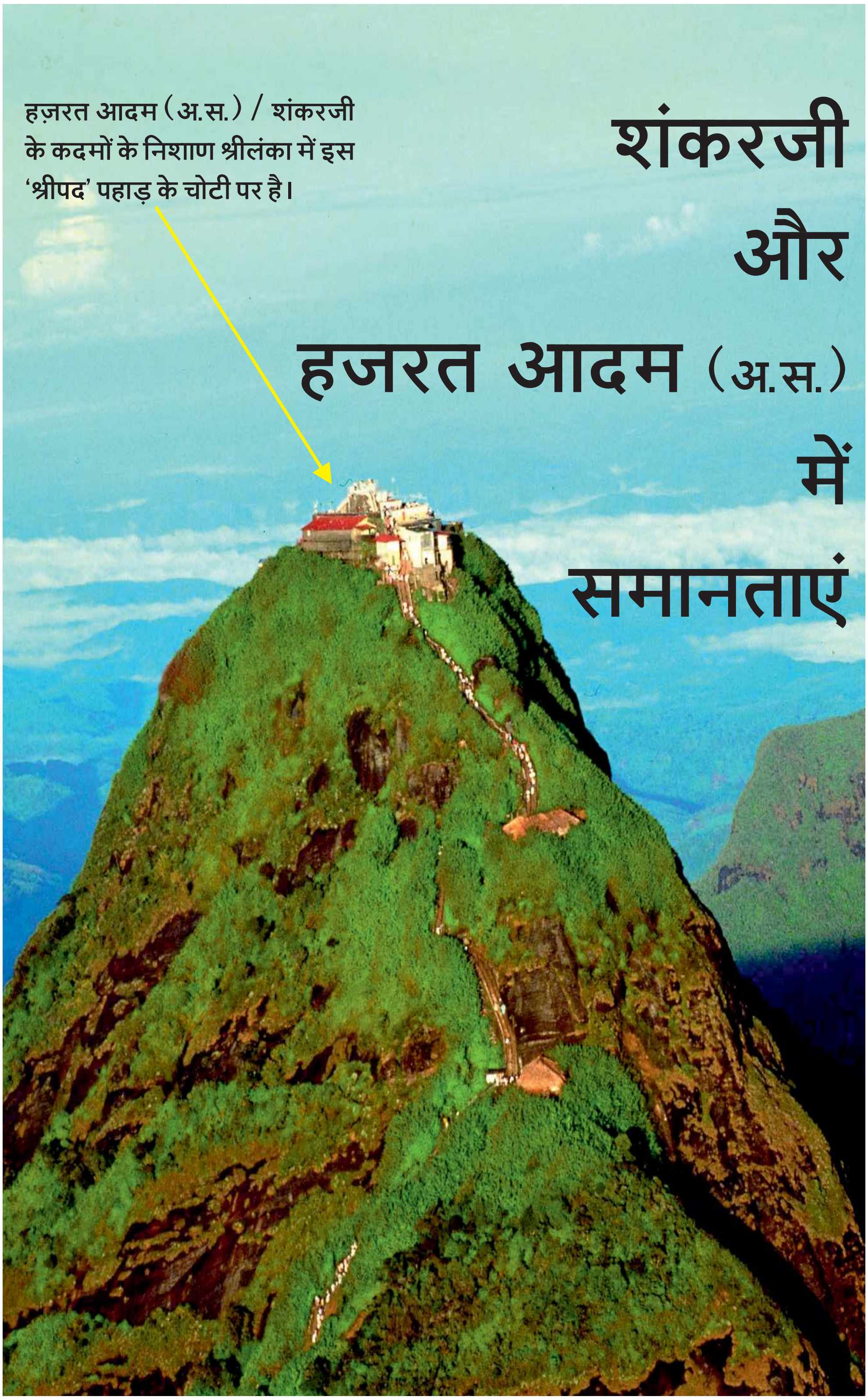

शंकरजी और हजरत आदम (अ.स.) में समानताएं

लेखक : क्यू. एस. खान
B.E (Mech)

Tanveer Publication
Hydro Electric Machinary Premises
A-12, Ram Rahim Udyog Nagar, Bus stop lane,
L.B.S Marg, Sonapur, Bhandup (West)
Mumbai- 400078
Phone - 022-25965930 Cell- 9320064026
E-mail- qsk1961@gmail.com
Website- **www.qskhan.com**

No Copyright

इस पुस्तक की कॉपी-राइट क्यू. एस. खान के पास है। मगर इस बात की आम अनुमति है की इस पुस्तक को बेचने के लिए या मुफ्त बांटने के हेतू कोई भी इसे प्रकाशित कर सकता है। और यदि इस पुस्तक की मूल शिक्षा में परिवर्तन न किया जाए तो इस पुस्तक की किसी भी भाषा में अनुवाद की भी आम अनुमति है। हम इसके बदले में कोई रॉयल्टी नही मांगते हैं। अच्छी प्रिंट के लिए आप हमसे इस पुस्तक की सॉफ्ट कॉपी ले सकते हैं।

पुस्तक का नाम	:-	शंकरजी और हज़रत आदम (अ.स.) में समानताएं
लेखक	:-	क्यू. एस. खान
ISBN NO.	:-	978-93-80778-41-9
First Edition	:-	Jan-2018
Price	:-	₹ 40/-
DTP Work	:-	Vitthal. S. Acharekar
Printed At	:-	Roshni Publishers C/21, 98, Sapna Colony, Rajajipuram, Lucknow, (U.P) Md. Ikhlaq Nadvi-09453834478

Books Available at :-

1) Tanveer Publication (Mumbai) :- Q.S. Khan-9320064026
2) Roshni Publishers. (Lucknow) :- Mohammed Ikhlaq Nadvi-09453834478
3) Firdos Kitab Ghar (Mumbai) :- Maulana Anees Qasmi-9892184258

अनुक्रमाणिका

१. शंकरजी और हज़रत आदम (अ.स.) में समानताएँ........................०४
२. ब्रह्मांण्ड के निर्माण का उल्लेख ०६
३. शंकरजी का जन्म..१०
४. दक्ष द्वारा शंकरजी का अपमान...११
५. दक्ष पर धिक्कार...१२
६. सती का धरती पर आगमन...१४
७. शंकरजी और हरम का पवित्र स्थान.......................................१६
८. गणेश और कार्तिकेय...१८
९. हजरत आदम (अ.स.) का परिचय...२०
१०. दक्क्ष घटना का विश्लेषण-भाग-१.......................................२५
१०. ब्रह्माजी का परिचय २६
११. विष्णु और तुलसी की कहानी २८
१२. आकाशवाणी का परिचय..३०
१३. दक्क्ष घटना का विश्लेषण-भाग-२.......................................३३
१४. भगवद् गीता के अनुसार ईश्वर की प्रार्थना कैसे करें?......................३६
१५. भगवद् गीता के विशेष उपदेश...३९

अध्याय- १

शंकरजी और हज़रत आदम में समानताएँ

● अगर हम शंकर जी के जीवन का अध्ययन करें तो हमें उनसे या उनके जीवन से जुड़े सात तथ्यों का पता चलता है।

शंकरजी के बारे में तथ्य हमें शिवपुराण में मिलते हैं। वह सात घटनाएं या तथ्य निम्नलिखित हैं:-

१) शंकरजी बिना माता पिता के अस्तित्व में आए। जब ब्रह्माजी ईश्वर की याद में ध्यान लगाए बैठे थे तब शंकरजी उनके माथे से प्रकट हुए।
(शिव पुराण, भाग-१, रुद्र का प्रकटीकरण, अध्याय-१५, पेज नं.२४८)

२) जब शंकरजी अस्तीत्व में आए तो आप का आधा शरीर पुरुष और आधा स्त्री का था।
(शिव पुराण, भाग-१, रुद्र का प्रकटीकरण, अध्याय-१५, श्लोक नं.५६, पेज नं.२४९)

३) दक्ष ने शंकरजी का अपमान किया था।
(शिव पुराण, भाग-१, रुद्र संहिता, सेक्शन-२, सती कथा, अध्याय-२६, श्लोक १४-१६, पेज नं.३९६)

४) इस अपमान के कारण आकाशवाणी (ईश्वर) ने दक्ष को शाप दिया और धिक्कार दिया था।
(शिव पुराण, भाग-१, रुद्र संहिता सेक्शन-२, सती कथा, अध्याय-३१, श्लोक १-२, पेज नं.४१७)

५) दक्ष ने जो शंकर जी का अपमान किया था, इस अपमान से क्रोधित होकर आप की पत्नी सती देवी ने अपना शरीर स्वर्ग लोक में त्याग दिया और धरती पर मेना पहाड़ की बेटी अपनी खुशी से बन गंई। धरती पर आपका नाम पार्वती था।
(शिव पुराण, भाग-२, पार्वती खण्ड, सेक्शन-२, सती खण्ड, अध्याय-१, श्लोक ४४-४५, पेज नं.२७८)

६) इस धरती पर शंकर जी और पार्वती जी का फिर विवाह हुआ और आप दोनों हरम के पवित्र धरती पर रहने लगे।
(शिव पुराण, भाग-४, वायव्यीया संहिता, सेक्शन-१, अध्याय-२४, श्लोक-२३, पेज-१८५९)

७) शंकरजी और पार्वती जी के दो पुत्र थे। गणेश और कार्तिकेय। विवाह के वाद विवाद और गणेशजी के कारण कार्तिकेय हमेशा के लिए माता पिता को छोड़ कर चले गए।
(शिव पुराण, रुद्रसंहिता, कुमार खण्ड-४, अध्याय-

२०, पेज नं-७७५, श्लोक-२५)

● अगर हम हजरत आदम (अ.स.) के जीवन का अध्ययन करें तो सात घटनाएं या तथ्य जो शंकरजी के साथ हुए हैं, हम पाते हैं कि वही सात घटनाएं या तथ्य हजरत आदम के साथ भी हुए हैं।

वह सात घटनाएं निम्नलिखित है:-

१) आप बिना माता पिता के अस्तित्व में आए।

(पवित्र कुरआन, सूरे अल-हिजर, आयत-२९)

२) ईश्वर ने हजरत हव्वा को आप के शरीर के बांए (Left) भाग से उत्पन्न किया।

(पवित्र कुरआन, सूरे नीसा, आयत-१)

३) इब्लीस ने आपको आदरयुक्त प्रणाम (सज्दा) नहीं किया।

(पवित्र कुरआन, सूरे अल हिजर, आयत-३२)

४) आपका आदर न करने के कारण ईश्वर ने इब्लीस को धिक्कार दिया और स्वर्ग से निकाल दिया।

(पवित्र कुरआन, सूरे हिजरात, आयत-३४)

५) इब्लीस के कारण हजरत आदम और हजरत हव्वा भी जन्नत से निकाले गए।

(पवित्र कुरआन, सूरे अल आराफ, आयत-२४)

हजरत हव्वा धरती पर मिना के पास (मक्का के पास एक स्थान) पर उतरीं और हजरत आदम (अ.स.) का आगमन श्रीलंका में हुआ।

६) आप दोनों मक्का के निकट अराफात में मिले और आकर <u>हरम की पवित्र धरती</u> मक्का में बस गए। आप ने पहली बार काबा का निर्माण किया।

(पवित्र कुरआन, सूरे आले इमरान, आयत-९६, हदीस बेहकी)

७) पहले आपके दो पुत्र थे। काबील (cain) और हाबील (Abel)। विवाह के वादविवाद में बड़े बेटे काबील ने छोटे बेटे हाबील का वध कर दिया।

(पवित्र कुरआन, सूरे माईदा, आयत २७-३१)

● अब हम विस्तार से शंकरजी और हजरत आदम (अ.स.) के जीवन का अध्ययन करते है। मगर इससे पहले हम इस धरती के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं। इस ज्ञान से हमें सत्य युग, त्रेता युग, द्वापर युग और कल युग को समझने और इन युगों में धरती पर कौन से प्राणी रहते थे इस को समझने में आसानी होगी।

****

अध्याय- २

ब्रह्मांण्ड के निर्माण का उल्लेख

● विज्ञान के अनुसार १३७० करोड़ वर्ष पुर्व ब्रह्माण्ड में जो कुछ पदार्थ (matter) और उर्जा (Energy) थी वह एक बिंदु (point) पर जमा थी। उस बिंदु का आयतन शुन्य था। और घनत्व (Density) अनंत (infinite) थी। उस समय समय (Time) की गति भी शुन्य थी, अर्थात समय रुका हुआ था। फिर एक धमाका हुआ और वह बिंदू जिस का आयतन (Volume) शुन्य (Zero) था वह अस्तित्व में आ गया। और गरम उर्जा की तरह चारों तरफ फैल गया। और इसी क्षण से समय का आरंभ हुआ।

● उस गरम उर्जा से एलेक्ट्रॉन (Electron) न्युट्रॉन (Neutron) और प्रोट्रॉन (Proton) इत्यादि बने। फिर उन से परमाणु (Atom) और अणु (Molecule) बने। फिर उन से एक गरम गैस बनी।

जब यह गैस कुछ ठंडी हुई तो इसने पदार्थ का रुप ले लिया और बारीक (small) कण (Particles) बन गए। फिर इन ही कणों से ब्रह्माण्ड के सभी सितारे (stars) और ग्रह (planets) बने।

● सितारे और ग्रह बनने की प्रक्रिया ४५० करोड़ वर्ष पहले पूरी हुई। अर्थात हमारी धरती ग्रह के रुप में ४५० करोड़ वर्ष पूर्व अस्तित्व में आई।
उस समय यह बहुत गरम थी और धरती की सतह (surface) पर लावा फैला हुआ था। इस सिद्धांत को बिग बैंग थेरी (Big bang theory) कहते हैं।

● जब हमारी धरती कुछ ठंडी होना शुरु हुई तो धरती की सतह से उठने वाली गैस बादल के रुप में धरती के उपर छा गई। और जब वातावरण कुछ और ठंडा हुआ तो वह बरसने लगी और कई करोड़ वर्ष तक बरसती रही। और सारी धरती पानी में डूब गई।

● १०० करोड़ वर्ष पूर्व उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव (North and South pole) पर बर्फ बनना शुरु हुआ। जिससे धरती का २९% भाग पानी से बाहर आ गया। इसी २९% भाग पर आज मानवजाति रहती है।

● १०० करोड़ वर्ष पूर्व जब धरती पर पानी ही पानी था तो ईश्वर ने जीवकोष (living cell) और फिर उनसे कीड़े मकोड़े बनाए।

● ६० करोड़ वर्ष पूर्व धरती पर घने जंगल उग आए। ईश्वर ने इन जंगलों को धरती में फिर दफन कर दिया। आज हम इन्हीं जंगलों से बने पेट्रोल को धरती से निकालते हैं।

● ३० से १५ करोड़ वर्ष पूर्व के बीच ईश्वर ने धरती पर डायनोसोरस जैसे बहुत बड़े बड़े जीव पैदा किए।

● १५ से ६ करोड़ वर्ष पूर्व के बीच ईश्वर ने डायनोसोरस को धरती पर से खतम कर दिया, और उड़ने वाले बड़े बड़े पक्षी पैदा किए।

● ६ से २ करोड़ वर्ष के पूर्व बीच ईश्वर ने धरती पर बंदर और अनेक प्रकार के जीव जन्तु पैदा किए।

● २ करोड से ६० लाख वर्ष पूर्व के बीच ईश्वर ने धरती पर अनेक प्रकार के जानवरों के साथ गोरीला की तरह बड़े बंदर भी पैदा किए।

● पिछले ६० लाख वर्ष से धरती का वातावरण मानवजाति के लिए भी अनुकूल है।

● ३८,९३,००० वर्ष पूर्व सत्य युग का आरंभ हुआ । यह १७,२८,००० वर्ष अवधि का था। इस युग में केवल देवता थे।

● सत्य युग के बाद त्रेता युग का आरंभ हुआ। इस युग की अवधि १२,९६,००० वर्ष थी। यह श्री रामजी का युग था। इस युग में ईश्वर ने राक्षस और निम्नलिखित जातियों को भी पैदा किया-
१) विद्याधर २) अप्सरा ३) राक्षस ४) गन्धर्व ५) किन्नर ६) पिशाच ७) गुह्यक। इस युग में धरती पर गोरीला जैसे बंदर भी बहुत थे।

● त्रेता युग के बाद द्वापर युग का आरंभ हुआ। यह श्री कृष्ण जी का युग था। इस युग की अवधी ८६४००० वर्ष थी ।

महाभारत का युद्ध इसी युग में हुआ था। इस युद्ध में १,६८,००,००,००० लोग मारे गऐ थे। और यह इसी युग में सम्भव था जब धरती पर केवल देवता और राक्षस रहते थे। क्योंकि पांच हजार वर्ष पूर्व धरती पर कुल मानवजाती की संख्या इतनी न थी। और दुसरे विश्व युद्ध में केवल ६ करोड़ लोग मारे गए थे। इसलिए अगर यह युद्ध कल युग में हुआ होता तो इतने लोग कमी कभी मारे न जाते।

● द्वापर युग के बाद कलयुग का आरंभ हुआ। यह मनु (Noah or Hazrat Noah) के युग में आए बाढ़ (Flood) के बाद से आरंभ हुआ था। इसके ५१०० वर्ष व्यतीत चुके है।

● स्वयंभुव मनु या Prophet Adam या हजरत आदम (अ.स.) यह धरती पर १०,००० BC (इसा पूर्व) में आए थे। अर्थात धरती पर मानवजाति का अस्तित्व केवल १२००० वर्ष पुराना है। इसके पहले धरती पर मानवजाति के रहने का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

● डॉक्टर वेद प्रकाश उपाध्याय यह वैदिक संस्कृत के प्रकांड विद्वान हैं। आप पंजाब विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के हेड ऑफ दी डिपार्टमेंट थे। आपकी एक पुस्तक का नाम है 'वेदों और पुराणों के आधार पर धार्मिक एकता की ज्योति'। इस पुस्तक की प्रस्तावना में आप लिखते है कि त्रेता और द्वापर युग में धरती पर केवल देवता और राक्षस रहते थे । उस समय मानवजाति का अस्तित्व न था । उन के पुस्तक की प्रस्तावना का कुछ हिस्सा हम यहाँ नकल करते हैं-

● वेद सर्व-प्राचीन एवं जगत् के सर्वप्रथम ग्रन्थ हैं, उनके बाद ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, तथा पुराणों की गणना होती है। ये ग्रन्थ आदम के पूर्ववर्ती देवर्षियों द्वारा लिखे गये थे। देवर्षि नारद-रचित भक्तिसूत्र आज भी उपलब्ध है। भविष्य-पुराण प्रतिसर्ग पर्व में व्यास जी सूत द्वारा वर्णित भावी वृत्तान्त उपलब्ध है। भविष्य-पुराण प्रतिसर्ग पर्व में व्यास जी सूत द्वारा वर्णित भावी वृतान्त (आदम एवं हव्यवती वृत्तान्त) को सुनाते हैं जिसका वर्णन आगे किया जाएगा। आदम काल से पूर्व का चरित्र मानवेतर अर्थात् देवों तथा राक्षसों का चरित्र है, जिस पर मनुष्य की बुद्धि नहीं ठहरती और उन देव चरित्रों (राम, हनुमान तथा कृष्णादि के चरित्रों) में मानवबुद्धि असंगति देखती हैं, जब कि देवों तथा असुरों के लिए ऐसे चरित्र सर्वथा सम्भव हैं। भविष्य में आदम की सन्तानों का पृथ्वी पर अधिकार होगा, यह जानकर अठ्ठासी हजार ऋषि पहाड़ों में चले जाते हैं। इसकी पुष्टि भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व चतुर्थ अध्याय में आए हुए अधोलिखित श्लोकों से होती है-

आर्यदेशा क्षीणवन्तो म्लेच्छवंशा बलान्विता।
भविष्यन्ति भृगुश्रेष्ठ तस्माच्च तुहिनाचलम्
गत्वा विष्णुं समाराध्य गमिष्यामो हरेः पदम् ।
इति श्रुत्वा द्विजाः सर्वे
नैमिषारण्यवासिनः।
अष्टाशीति सहस्राणि गतास्ते तुहिनाचलम् ।

भविष्य पुराण में आदम के बाद जो ईश दूतत्व की एक एकतान्ता उपलब्ध होती है, वही भविष्य में ठीक उसी प्रकार घटित हुई और परवर्ती धर्म ग्रन्थों बाईबिल एवं कुरआन से उस पर वृहत प्रकाश पड़ा।

बाइबिल एवं कुरआन में जो भी ईश दूतत्व के विषय में वर्णन हुआ वह व्यास जी द्वारा भावी आदम एवं हव्यवती वृत्तान्त के पहले

ही व्यक्त कर दिया गया।

मनः शृणु ततो गाथा, भावी सूतेन वर्णिताम।
कलेर्युगस्य पूर्णा तां तच्छ्रुत्वा तृप्तिमावह।

''अर्थात 'हे मन, सूत द्वारा वर्णित भविष्य में होने वाली कलियुग की उस पूर्ण गाथा को सुनो और तृप्ति प्राप्त करो।''

इतना कहकर आदम और हव्यवती की कथा का प्रारम्भ करते हैं जो भविष्य में होगी। वेदों का एकेश्वरवाद, भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व में वर्णित ईशदूतत्व एवं न्यूह के समय जल-प्लावन का आना तथा आदम के पहले देवों और असुरों की सत्ता का होना और उनके २ पारस्परिक युद्ध, उनके लिये भी ईश्वरीय नियम का विधान तथा यज्ञादि करना ब्राम्हण ग्रन्थों से सिद्ध है। जैसे देवताओ ने दर्श तथा पौर्णिमास योगों द्वारा भी असुरों को मास के कृष्ण पक्षको छोड़ देने पर बाध्य किया था, जिस पर असुरों का अधिकार था (शब्रा ०१. ७.२, २२-४, तैब्रा ०१.५.६.३.४) तथा देवताओं ने असुरों के तीन दुर्गो को, जो लोहा, चांदी और स्वर्ण के बने थे, उपसद् कृत्यों द्वारा ध्सवस्त किया, (तैसं ०६.२.३.१, मैसं ०३.८.१, शब्रा ०३.४.४,३.५, कौब्रा ०८.८)। भविष्य पुराण में कहीं-कहीं इस्लाम धर्म के लिए नैगम धर्मम (वैदिक धर्म) कहा गया है। भविष्य पुराण में जहाँ ईसाई धर्म और इस्लाम धर्म को म्लेच्छ धर्म कहा गया है, वहीं पर म्लेच्छ शब्द का अर्थ भी समझाया है।

आचारश्य विवेकश्च द्विजता देवपूजनम् ।
कृतान्येतानि तेनैव तस्मान्म्लेच्छः स्मृतो बुधैः ।।
विष्णुभक्त्यग्रि पूजा च ह्यहिंसा च तपो दमः।
धर्माण्येतानि मुनिभिर्म्लेच्छानां हि स्मृतानि वै।।

सदाचार, ऊचाँ ज्ञान, ब्राम्हणत्व, देवपूजन (दिव्य परमात्मा की पूजा) हनूक नामक ईश दूत के द्वारा किये गये, इसी से उसे विद्वानों ने म्लेच्छ कहा। विष्णु की भक्ति, प्रकाशक परमात्मा की पूजा, अहिंसा, तपस्या, इन्द्रियदमन ये धर्म मुनियों ने म्लेच्छों के बताए हैं।

अब हम वेदों का एकेश्वरवाद एवं पुराणों में वर्णित ईशदूतत्व तथा सार्वभौम धर्म का प्रमाणिक विवेचन प्रस्तुत करेंगे।

लेखक-प. वेद प्रकाश उपाध्याय
एम.ए. (संस्कृत वेद)

- डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय की पुस्तक की प्रस्तावना पढ़कर आप देवता, और मानवजाति के युगों का अंतर समझ सकते है।

(Note-'वेदों और पुराणों के आधार पर धार्मिक एकता की ज्योति', इस पुस्तक को आप मेरे वेबसाईट www.qskhan.com से मुफ्त डाउनलोड कर सकते है।)

****

अध्याय- ३
शंकरजी का जन्म

● शंकरजी के जन्म के बारे में शिव पुराण में निम्नलिखित श्लोक है-

● तपस्यतश्च सृष्ट्यर्थं भ्रुवोर्घ्राणस्य मध्यतः। अविमुक्ताभिधादेशात् स्वकीययान्मे विशेषतः ।५५।

त्रिमूर्तीनां महेशस्य प्रादुरासीद् घृणानिधिः । अर्धनारीश्वरो भूत्वा पूर्णांशः सकलेश्वर ।५६।
(शिव पुराण, भाग-१, रुद्र-संहिता (सृष्टी-खण्ड:१) अध्याय-१५, श्लोक-५५-५६, पेज नं.२४९)

इस प्रकार सृष्टि के लिए तप करते हुए भ्रू एवं घ्राण के मध्य से, जिसे अविमुक्त कहते हैं, ।५५।

उस मेरे स्थान से त्रिमूर्तियों में महेश के अंश से परम कृपालु सर्वेश्वर पूर्णांश अर्धनारीश्वर प्रगट हो गये ।५६।

● (Brahma said) While I was performing penance for creation, the merciful lord Shiv of Trinity, came out of the spot called Avimukta between my eyebrows and the nose. **He manifested himself as Half woman and Half man in full potency.**

(Shiv Puran, Rudra Samitha, Section-I, Creation, Chapter 15, The Manifestation of Rudra, Page-249, Mantra 55-56, Translated by J. L. Shashtri)

● यह पुस्तक शिवपुराण के निम्नलिखित अनुवाद को पढ़कर लिखी गई है-

हिन्दी अनुवाद

श्रीशिवमहापुराणम्
टीकाकार तथा सम्पादक :
(व्याकरणाचार्य-साहित्यवारिधि-तन्त्ररत्नाकार)
आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्री
प्रकाशक:
श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१
०५४२-२३९२५४३, २३९२४७१

अंग्रेजी अनुवाद

Siva Purana
Translated by : J. L. Shashtri
Publish by :
Motilal Banarsidass Publishers Private Limited. Delhi. 110 007.
8 Mahalaxmi Chamber, warden road, Mumbai- 400 026

****

अध्याय-४
दक्ष द्वारा शंकरजी का अपमान

● इस युग में जब कोई महायज्ञ किया जाता है तो उस में सभी देवी देवतावों की पूजा कि जाती है। इसी प्रकार प्राचीन काल में भी जब कोई देवता महायज्ञ करता था तो उस में भी सभी देवी देवताओं की पूजा की जाती थी और उनको उस यज्ञ में उपस्थित रहने का आमंत्रण भी दिया जाता हैं।

ऐसे ही एक यज्ञ में सभी देवी-देवता आमंत्रित थे। यज्ञ-स्थल पर ब्रम्हा, विष्णु और शंकरजी और अन्य देवी-देवता पहले पहुंच गए और दक्ष बाद में आए।

दक्ष को आते देख सभी देवी-देवताओं ने खड़े होकर या झुककर प्रणाम किया। मगर शंकरजी आपने स्थान पर बैठे रहे।

शंकरजी का इस प्रकार अपने स्थान पर बैठे रहना दक्ष को अच्छा नही लगा और उस ने निम्नलिखित शब्दों में शंकरजी का अपमान किया-

● *एते हि सर्वे च सुराऽसुरा भृशं नमन्ति मां विप्रवरास्तथर्षयः। कथं ह्यसौ दुर्जनवन्महामनास्त्वभूत्तु यः प्रेतपिषाचसंवृतः।१४।*
(शिव पुराण, भाग-१, रुद्रसंहिता, सती खण्ड-२, अध्याय-२६, पेज नं-३८७, श्लोक-१४)

इन सभी देवताओं, ऋषियों, ब्राह्मणों तथा राक्षसों ने मुझे आता देखकर प्रणाम किया। परन्तु प्रेत-पिशाचों से युक्त इस महामनस्वी शिव ने मेरे साथ इस प्रकार दुर्जन के समान आचरण कैसे किया।१४।

● *श्मशानवासी निरपत्रपो ह्ययं कथं प्रमाणं न करोति मेऽ धुना। लुप्तक्रियो भूतपिशाचसेवितो मत्तोऽविधो नीतिविदूषकः सदा।१५।*
(शिव पुराण, भाग-१, रुद्रसंहिता, सती खण्ड-२, अध्याय-२६, पेज नं-३८७, श्लोक-१५)

● शमशानवासी, निर्लज्ज, क्रियाहीन, भूत-पिशाचों से सेवित, उन्मत्त और नीतिपथ को दूषित करनेवाले इस शिव ने मुझे प्रणाम क्यों नहीं किया।१५।

● *पाखण्डिनो दुर्जनपापशीला दृष्ट्वा द्विजं प्रोद्धतानिन्दकाश्च । बाढ्वां सदासक्तरतिप्रवीणास्तस्मादमुं शप्तुमहं प्रवृत्तः।१६।*
(शिव पुराण, भाग-१, रुद्रसंहिता, सती खण्ड-२, अध्याय-२६, पेज नं-३८७, श्लोक-१६)

पाखण्डी, दुर्जन, पापशील, ब्राह्मणों को देखकर उनकी निन्दा करनेवाले, उच्छृङ्खल, स्त्री में आसक्त तथा व्यभिचारी, ये शाप के योग्य है, इसलिए मैं इस पापी रुद्र को शाप दे रहा हूँ।

******

अध्याय-५

दक्ष पर धिक्कार

● देवताओं के प्राचीन युग में किसी भी महा यज्ञ में ब्रह्मा, विष्णु, और शंकरजी को आमंत्रित करना और उनकी पुजा करना अनिवार्य समझा जाता था। शंकरजी को और अपमानित करने के लिए दक्ष ने अपने स्थान पर एक महा यज्ञ का आयोजन किया और शंकरजी को छोड़ कर सभी देवी देवताओं को आमंत्रित किया।

● शिव पुराण में लिखा है कि शंकरजी दक्ष के दामाद थे। और स्वर्ग लोक में आप की पत्नी सती देवी दक्ष की बेटी थीं।

● जब सती को अपने पिता के इस यज्ञ का पता चला तो उन्हें बहुत बुरा लगा। वह अपने पति शंकर जी से आज्ञा लेकर अपने पिता के घर गंई, और पिता के घर उन्हें जब वह सन्मान नहीं मिला जो मिलना चाहिए था तो वह बहुत क्रोधित हुंई। उन्होंने निम्नलिखित शब्दों में अपने पिता और उपस्थित सभी लोगों को शाप दिया-

● *यो निन्दति महादेवं निन्द्यमानं शृणोति वा। तावुभौ नरकं यातौ यावचन्द्रदिवाकरौ ।३८।*

● हे पिता, जो शिव की निन्दा करता है अथवा शिव की निन्दा को सुनता है वे दोनों ही यावच्चन्द्र-दिवाकर नरक में निवास करें। ।३८।

(शिव पुराण, रुद्रसंहिता, सती खण्ड-२, अध्याय-२९, पेज नं-४०२, श्लोक-३८)

● फिर सती देवी ने यौगिक शक्ति से अपने अंदर एक अलौकिक आग को पैदा किया और उस में जल कर अपना देह त्याग दिया।

● शंकरजी के गण जो सती देवी के साथ आए थे, उन में से कुछ ने तो स्वयम अपना जीवन त्याग दिया। और कुछ गणों ने जब दक्ष को मारना चाहा तो भार्गव ने मंत्रो से बहुत से राक्षस पैदा कर दिए, जिन्होंने शंकरजी के गणों को या तो मार डाला या भागने पर मजबूर कर दिया।

● जब यह सब हो रहा था उस समय सब को एक आकाशवाणी सुनाई दि जो यह शब्द कह रही थी-

● जगत्पिता शिवः शक्तिर्जगन्ता च सासती। सत्कृतौ न त्वया मूढ! कथं श्रेयो भविष्यति ।।२५।।

(शिव पुराण, रुद्रसंहिता, सती खण्ड-२, अध्याय-३१, पेज नं-४०९, श्लोक-२५)

शिव एवं सती इस जगत् के माता-पिता हैं। हे मूढ़! तुमने उनका सत्कार नहीं किया, अत: किस प्रकार तुम्हारा कल्याण होगा? ।।२५।।

● *यदी देवाः करिष्यन्ति साहाय्यमधुना तव। तदा नाशं समाप्स्यन्ति शलभा इव वह्निना। ।२९।*

यदि इस समय किसी भी देवता ने तुम्हारी सहायता की तो वह अग्नि में शलभ (पतंगे) के समान नष्ट हो जाएगा।

● *ज्वलत्वद्य मुखं ते वै यज्ञध्वंसो भवत्वति। सहायास्तव यावन्तस्ते ज्वलन्त्वद्य सत्वरम् ।३०।*

अवश्य ही सती के इस अपमान से तेरा मुख जल जावे, यज्ञ नष्ट हो जावे तथा ये सभी तुम्हारे सहायक देवता भी शीघ्र जलकर नष्ट हो जावें।३०।

● *निर्गच्छन्त्वमराःवोकमेतदध्ववरमण्डपात् । अन्यथा भवतां नाशो भविष्यत्यद्य सर्वथा ।३२।*

देवता लोग शीघ्र ही इस यज्ञमण्डप से बाहर हो जावें अन्यथा इनका अवश्य विनाश हो जायेगा ।३२।

● *निर्गच्छ त्वं हरे शीघ्रमेतध्वरमण्डपात् । अन्यथा भवतो नाशो भविष्यत्यद्य सर्वथा ।३४।*
(शिव पुराण, रुद्रसंहिता, सती खण्ड-२, अध्याय-३१, पेज नं-४०९, श्लोक-३४)

हे विष्णो! तुम भी इस यज्ञ मण्डप से बाहर चले जाओ, अन्यथा तुम्हारा भी विनाश हो जाएगा।३४।

● *निर्गच्छ त्वं विधे! शीघ्रमेतदध्वरमण्डपात् । अन्यथा भवतो नाशो भविष्यत्यद्य सर्वथा ।३५।*
(शिव पुराण, रुद्रसंहिता, सती खण्ड-२, अध्याय-३१, पेज नं-४०९, श्लोक-३५)

हे विधाता (ब्रह्मा) तुम शीघ्र इस स्थान से बाहर हो जाओ, अन्यथा तुम्हारा सर्वथा नाश हो जाएगा।३५।

● *इत्युक्त्वाऽध्वरशालायामखिलायां सुसंस्थितान् । व्यरमत् सा नभोवाणी सर्वकल्याणकारीणी ।३६।*

इस प्रकार सबका कल्याण करनेवाली वह आकाशवाणी यज्ञमण्डप में आये हुए सभी लोगों को सुनाते हुए मौन हो गयी।३६।

● *तच्छुत्वा व्योमवचनं सर्वे हर्यादयः सुरोः। अकार्षुर्विस्मयं तात मुनयश्च तथाऽपरे ।३७।*
(शिव पुराण, भाग-१, रुद्रसंहिता, सती खण्ड-२, अध्याय-३१, पेज नं-४०९, श्लोक-३६-३७)

आकाशवाणी को सुनते ही विष्णवादि देवगण तथा समस्त मुनिगण आश्चर्य से स्तम्भित हो गये।३७।

******

अध्याय- ६
सती का धरती पर आगमन

● स्वर्ग लोक में अपना शरीर त्यागने के बाद सती देवी इस धरती पर मेना पहाड़ की बेटी के रुप में प्रकट हुईं। इस धरती पर आप का नाम पार्वती था। इस धरती पर आप का विवाह फिर शंकरजी से हुआ। आप दोनों हरम के पवित्र धरती पर रहे। आप के दो पुत्र हुए, गणेश और कार्तिकेय। गणेश के विवाह के कारण कार्तिकेय माता पिता को छोड़ कर हमेशा के लिए चले गए।

● जो कुछ हमने उपर लिखा हैं उस का वर्णन शिव पुराण के निम्नलिखित श्लोकों में है-

● यदा दाक्षायणी देवी हरेण सहिता मुदा हिमाचले सुचिक्रीडे लीलया परमेश्वरी ।४।

मत्सुतेयमिति ज्ञात्वा सिषेवे मातृवर्चसा। हिमाचलप्रिया मेना सर्वसिद्धिभिरनिर्भरा ।५।
(शिव पुराण, रुद्रसंहिता, पार्वती खण्ड-२, अध्याय-१, पेज नं-४६३, श्लोक-४-५)

दक्षकन्या सती देवी जब प्रसन्न होकर शिव के साथ हिमालय पर्वत पर लीलापूर्वक क्रीडा करती थीं, तब वात्सल्यभाव से भरी हुई हिमालयप्रिया मेना अपनी सम्पूर्ण ऋद्धि-सिद्धियों से यह मेरी बेटी है ऐसा समझकर उनकी सेवा करती थीं।४-५।

● *यदा दाक्षायणी रुष्टा नादृता स्वतनुं जहौ। पित्रा दक्षेण तद्यज्ञे सङ्कृता परमेश्वरी ।६।*

तदैव मेनका तां सा हिमाचलप्रिया मुने!। शिवलोकस्थिता देवीमारिराधयिषुस्तदा।७।
(शिव पुराण, रुद्रसंहिता, पार्वती खण्ड-२, अध्याय-१, पेज नं-४६३, श्लोक-६-७)

जब दाक्षायणी सती देवी ने पिता के अपमान से रुष्ट होकर यज्ञ में अपना शरीर छोड़ दिया। ।६।

हे मुने! तब हिमाचल प्रिया मेना ने शिवलोक में स्थित भगवती सती का आराधन किया। ।७।

● *तस्यामहं सुता स्यामित्यवधार्य सती हृदा। त्यक्तदेहा मनो दध्रे भवितुं हिमवत्सुता।८।*
(शिव पुराण, रुद्रसंहिता, पार्वती खण्ड-२, अध्याय-१, पेज नं-४६३, श्लोक-८)

उसी समय सती देवी ने अपने मन में संकल्प कर लिया कि मैं हिमालय की कन्या बनकर जन्म लूँगी। ।८।

● *समयं प्राप्य सा देवी सर्वदेवस्तुता पुनः। सती त्यक्ततनुः प्रीत्या मेनकातनयाऽभवत् ।९।*
(शिव पुराण, रुद्रसंहिता, पार्वती खण्ड-२, अध्याय-१, पेज नं-४६३, श्लोक-९)

नाम्ना सा पार्वती देवी तपः कृत्वा सुदुःसहम् । नारदस्योपदेशाद् वै पतिं शिवं पुनः ।१०।
(शिव पुराण, रुद्रसंहिता, पार्वती खण्ड-२, अध्याय-१, पेज नं-४६४, श्लोक-१०)

मेना की कन्या होने पर उनका नाम पार्वती हुआ, जिन्होंने नारद के उपदेश से महा कठिन तप कर पुन: शिव को अपना पति बनाया।१०।

****

अध्याय-७
शंकरजी और हरम का पवित्र स्थान

शिव पुराण में शंकरजी के निवास के बारे में निम्नलिखीत श्लोक है-

- *अन्तर्धानगतो देव्या सह सानुचरो हरः। क्व यातः कुत्र वासः किं कृत्वा विरराम ह।१।*

(शिव पुराण, वायवीयसंहिता (पूर्व खण्ड:) अध्याय-२४, श्लोक नं-१, पेज. नं.७६६)

हे वायुदेव! जब अनुचरों सहित शिवजी अर्न्तध्दान हो गये, तब वे कहाँ गये और क्या करने लगे?

- *महीधरवरः श्रीमान् मन्दरश्चित्रकन्दरः। दयितो देवदेवस्य निवासस्तपसोऽभवत् ।२।*

(शिव पुराण, वायवीयसंहिता (पूर्व खण्ड:) अध्याय-२४, श्लोक नं-६, पेज नं. ७६६)

ऐश्वर्यो से युक्त, पर्वतों में श्रेष्ठ, विचित्र कन्दराओं से युक्त मन्दर नाम का पर्वत, जो शिवजी का अत्यन्त प्रिय है, वहीं शिवजी निवास करने लगे।

- *इदं तु शक्यते वक्तु मस्मिन् पर्वतसुन्दरे। ऋद्ध्या कयापि सौन्दर्यमीश्वरावासयोग्यता ।६।*

(शिव पुराण, वायवीयसंहिता पूर्व खण्ड: अध्याय-२४, श्लोक नं-६, पेज नं.७६६)

इस विषय में मैं इतना ही कह सकता हूँ कि, इस पर्वत पर एक अपूर्व समृद्धि है, जिससे यह सदाशिव की निवास-योग्यता को प्राप्त किया। ।६।

- *पितृभ्यां जगतो नित्यं स्नानपानोपयोगतः। अवाप्तपुण्यसंस्कारः प्रसरद्भिरितस्ततः ।९।*

- *लघुशीतलसंस्पर्शे रच्छाच्छैर्निराम्बुभिः। अधिराज्येन चाद्रीणामद्रिरेषोऽभिषिच्यते ।१०।*

(शिव पुराण, वायवीयसंहिता (पूर्व खण्ड) अध्याय-२४, श्लोक नं-९-१०, पेज नं.७६६)

यह पर्वत संसार के माता पिता को ज्ञान के प्रकाश और साफ पानी से सहायता करता है।

लघु और शीतल स्पर्श वाले, इधर-उधर प्रवाहित होने वाले, स्वच्छ जलपूर्ण झरणों के जलों से मानो उसका पर्वतराज पद पर अभिषेक किया जा रहा है।१०।

- *तत्रोद्यनमुप्राप्य देव्या सह महेश्वरः। **हरम** रमणीयासु दिव्यान्तःपुरभूमिषु ।२३।*

(शिव पुराण, वायवीयसंहिता (पूर्व खण्ड:) अध्याय-२४, श्लोक नं-२३, पेज. नं. ७६७)

और देवी के साथ वहाँ उद्यान को प्राप्त कर उसकी अन्त:पुर (हरम) की भूमि में रमण करने लगे।

Reaching the garden there along with the goddess lord Shiv sported about in the **divine harem grounds.**

(Shiv Puran,Vol-4, Vayaviyasamhita, Section-1, Chapter-24, Page-1859, Mantra-23, Translated by L.J.Shashtri)

नोट : हरम यह अरबी शब्द और नाम है जो संस्कृत के श्लोक में लिखा है। श्लोक में शब्द है हरम की पवित्र धरती। 'हरम की पवित्र धरती' विश्व में केवल मक्का को कहा जाता है।

****

अध्याय-८
गणेश और कार्तिकेय

शिवपुराण में गणेश और कार्तिकेय के बारे में निम्नलिखित वर्णन है।

● *पित्रोर्लालयतोस्तत्र सुखं चाति व्यवर्द्धत। तदा प्रीत्या मुदा चातिखेलनं चक्रतुः सुतौ ।५।*
(शिव पुराण, रुद्रसंहिता, कुमार खण्ड-४, अध्याय-१९, पेज नं-७६९, श्लोक-५)

माता पिता के दुलार से उनका सुख दिन-रात बढ़ने लगा और वे दोनों बड़ी प्रसन्नता से खेल-कूद करने लगे।५।

● *तावेव तनयौ तत्र मातापित्रोर्मुनीश्वर!। महाभक्त्या यदा युक्तौ परिचर्यां प्रचक्रतुः ।६।*

हे महामुनीश्वर! वे दोनों पुत्र अत्यन्त भक्ति के साथ माता-पिता की सेवा करते थे। ।६।

● *षण्मुख च गणेशे च पित्रोस्तदधिकं सदा। स्नेहो व्यवर्द्धत महाञ्छुक्लपक्षे यशा शशी।७।*

षण्मुख कार्त्तिकेय तथा गणेश में माता-पिता का प्रतिदिन स्नेह शुक्लपक्ष के चन्द्रमा के समान बढ़ने लगा। ।७।

● *कदाचित्तौ स्थितौ तत्र रहसि प्रेमसंयुतौ शिवा शिवश्च देवर्षे! सुविचारपरायणौ।८।*

हे देवर्षे! एक समय शिवा एवं पार्वती एकान्त में बैठे हुए कुछ विचार कर रहे थे। ।८।

● *विवाहयोग्यौ सज्जातौ सुताविति च तावुभौ। विवाहश्च कथं कार्यः पुत्रयोरुभयोः शुभम् ।९।*

अब हमारे ये दोनों पुत्र विवाह के योग्य हो गये हैं, अत: इन दोनों पुत्रों का किस प्रकार उत्तम रीति से विवाह किया जाये? ।९।

● *षण्मुखश्च प्रियतमो गणेशश्च तथैव च। इति चिन्तासमुद्विग्नौ लीलानन्दौ बभूवतुः।१०।*

जिस प्रकार षण्मुख अत्यन्त प्रिय हैं, उसी प्रकार गणेश भी अत्यन्त प्रिय हैं। इस प्रकार की चिन्ता करते-करते वे उनकी लीला का आनन्द लेने लगे।१०।

● *स्वपित्रोर्मतमाज्ञाय तौ सुतावपि संस्पृहौ। तदिच्छया विवाहार्थं बभूवतुरथो मुने!।११।*

अपने माता-पिता की यह इच्छा देखकर वे दोनों विवाह के लिए सहमत हो गये।११।

● *अहं च परिणेष्यामि ह्यहं चैव पुनः। परस्परं च नित्यं वै विवादे तत्परावुभौ ।१२।*

और मैं विवाह करुँगा, मैं विवाह करुँगा? इस प्रकार बारम्बार कहते दोनों आपस में विवाद करने लगे।१२।

● *श्रुत्वा तद्वचनं तौ च दम्पती जगतां प्रभू।*

लौकिकाचारमाश्रित्य विस्मयं परमं गतौ।१३।

जगत् के अधिपति वे दोनों शिवाशिव इस विवाद को सुन लोकाचार की रीति का आश्रय ले परम विस्मित हो गये।१३।

- *कि कर्तव्यं कथं कार्यो विवाहविधिरेतयोः। इति निश्चित्य ताभ्यां वै युक्तिश्च रचिताद्भुता।१४।*

अब क्या करना चाहिए और किस प्रकार इनके विवाह की विधि सम्पन्न की जाये? ऐसा विचार करते हुए पार्वती तथा शिव ने एक अद्भुत युक्ति रची।१४।

- *कदाचित् समये स्थित्वा समाहूय स्वपुत्रकौ। कथयामासतुस्तत्र पुत्रयोः पितरौ तदा।१५।*

एक समय पार्वती और शिव ने अपने दोनों पुत्रों को बुलाया और कहा। ।१५।

- *अस्माकं नियमः पूर्वं कृतश्च सुखदो हि वाम्। श्रूयतां सुसुतौ प्रीत्या कथयावो यथार्थकम्।१६।*

हमने एक नियम बनाया है, जो तुम दोनों के लिए सुखदायी है। हे मेरे उत्तम पुत्रों! उसे प्रीति से सुनो, हम लोग सत्य-सत्य कहते हैं।१६।

- *समौ द्वावपि सत्पुत्रौ विशेषो नात्र लभ्यते। तस्मात् पणः कृतः शन्दः पुत्रयोरुभायोरपि।१७।*

तुम दोनों ही पुत्र, समान भाव से हमें प्यारे हो, इसमें हमें कुछ विशेष नहीं कहना है, किन्तु हम लोगों ने तुम लोगों के लिए एक प्रतिज्ञा की है, जिससे तुम दोनों का कल्याण होगा।१७।

- *यश्चैव पृथिवीं सर्वां क्रान्त्वा पूर्वमुपाव्रजेत्। तस्यैव प्रथमं कार्यो विवाहः शुभलक्षणः।१८।*

तुम दोनों में जो कोई भी पृथ्वी की परिक्रमा कर पहले चला आयेगा उसी को विवाह का प्रथम शुभ लक्षण प्राप्त होगा।१८।
(शिव पुराण, रुद्रसंहिता, कुमार खण्ड-४, अध्याय-१९, पेज नं-७६९, श्लोक-५-१८)

जब कार्तिकेय धरती की परिक्रमा के लिए निकल पड़े तो गणेशजीने अपने माता-पिता शिव और पार्वतीजी के चारों तरफ सात बार चक्कर लगाए और कहा की धर्म की नियम के अनुसार माता-पिता बच्चों की दुनिया होते है। इस तरह आपकी चारों तरफ सात चक्कर लगाना यह विश्व की परिक्रमा करने के बराबर माना जाना चाहिए। गणेशजी कि इस बात को सत्य माना गया और उनका विवाह पहले कर दिया गया।

जब कार्तिकेय विश्व कि परिक्रमा करके वापस लौटे तो उन्हें मालूम हुआ कि गणेशजी का विवाह हो चुका है, तो उनको ऐसा लगा कि उनके साथ धोका हुआ है। इस कारण वह नाराज होकर अपने माता-पिता को छोड़कर हमेशा के लिए चले गए। जाते समय उन्होंने अपने माता-पिता से यह शब्द कहे,

- *न स्थातव्यं मया ततौ क्षणमप्यत्र किश्चन। यद्येवं कपटं प्रीतीमपहाय कृतं मयि।२५।*

मैं अब यहाँ क्षण मात्र भी नहीं रह सकता क्योंकि आपने मुझ पर प्रीति न कर कपट का व्यवहार किया है।२५।

(शिव पुराण, रुद्रसंहिता, कुमार खण्ड-४, अध्याय-२०, पेज नं-७७५, श्लोक-२५)

- *एवमुक्तवा गतस्तत्र मुने! सोऽद्यापि वर्तते। दर्शननैव सर्वेषां लोकांना पापहारकः।२६।*

हे नारद! दर्शन मात्र से ही सबका पाप हरण करने वाले कुमार कार्तिकेय कुमार ही रह गये।।२६।

- *तद्दिनं हि समारभ्य कार्त्तिकेयस्य तस्य वै। शिवपुत्रस्य देवर्षे कुमारत्वं प्रतिष्ठितम्।२७।*

उसी दिन से हे नारद! शिवपुत्र कार्तिकेय कुमार ही रह गये।।२७।

- *कार्तिक्यां च सदा देवा ऋषश्च सतीर्थकाः। दर्शनार्थं कुमारस्य गच्छन्ति च मुनीश्वराः।२९।*

हे मुनीश्वर! कार्त्तिक मास में सभी देवता, ऋषि तथा मुनिगण इस तीर्थ में कुमार के दर्शन के निमित्त जाते हैं।।२९।

- *उमाऽपि दुःखमानन्ना स्कन्दस्य विरहे सति। उवाच स्वामिनं दीना तत्र गच्छ मया प्रभो!।३१।*

तब स्कन्द के विरह से पार्वती को बड़ा हार्दिक कष्ट हुआ और वे दीन होकर शिवजी से कहने लगीं हे प्रभो! मेरे साथ आप वहाँ चलिए।३१।

- *पुत्रस्नेहातुरौ तौ वै शिवौ पर्वणि पर्वणि। दर्शनार्थं कुमारस्य तस्य नारद! गच्छतः।३६।*

तथापि हे नारद! पुत्र के स्नेह से आतुर हुए वे दोनों शिवाशिव पर्व-पर्व पर वहाँ जाते रहते हैं।३६।

- *अमावास्यादिने शम्भुः स्वयं गच्छति तत्र ह। पूर्णमासीदिने तत्र पार्वती गच्छति ध्रुवम्।३७।*

हर अमावस्या को वहाँ शिवजी जाते हैं एवं प्रति पूर्णमासी के दिन निश्चित रुप से पार्वती उनके दर्शन के लिए जाती हैं।।३७।

(शिव पुराण, रुद्रसंहिता, कुमार खण्ड-४, अध्याय-२०, पेज नं.-७७६, श्लोक-३७)

नोटः- (समाज में हमेशा बड़े भाई का विवाह पहले होता है। और छोटा भाई इस बड़े भाई के विवाह से खुश होता है। गणेश जी बड़े भाई थे! बड़े भाई के विवाह से कार्तिकेय का नाराज़ होकर अपने महान माता-पिता को छोड़कर हमेशा के लिए चले जाना आश्चर्यजनक है।)

****

अध्याय-९

हजरत आदम (अ.स.) का परिचय

● सब से पहले ईश्वर ने फरिश्तों को पैदा किया। यह ईश्वर की प्रार्थना करते है और ईश्वर कि आज्ञा से ब्रम्हाण्ड का बहुत सा काम करते है। फरिश्ते पाप नहीं करते। ईश्वर ने फरिश्ते के बाद जिन (Jin) जाति को अपनी प्रार्थना के लिए पैदा किया था। जिन जाती को मनुष्य कि तरह पाप और पुण्य दोनों करने की आज़ादी थी। मगर उन्होंने धरती पर बहुत आतंक मचाया था। जिस के कारण ईश्वर ने फरिश्ते भेज कर उन सब जिन्नों की जाति को घने जंगल और पहाड़ों की ओर भगा दिया और धरती पर मानवजाति को पैदा करने का निर्णय लिया।

● ईश्वर ने धरती की मिट्टी से हज़रत आदम (अ.स.) का शरीर बनाया और उस में आत्मा का प्रवेश किया।

● जब हज़रत आदम (अ.स.) जीवित हुए तो ईश्वर ने सभी फरिश्तों को हज़रत आदम (अ. स.) को प्रणाम (सजदा) करने का आदेश दिया। सभी फरिश्तों ने आज्ञा के अनुसार हज़रत आदम (अ.स.) को प्रणाम किया, केवल इब्लीस ने नहीं किया।

● इब्लीस एक तपस्वी जिन था। अपनी घोर तपस्या के कारण वह स्वर्ग में फरिश्तों के साथ रहता था। जब ईश्वर ने इब्लीस से पूछा के मेरे आदेशानुसार तूने हज़रत आदम (अ.स.) को प्रणाम क्यों नही किया तो उस ने कहा के मैं हज़रत आदम (अ.स.) से श्रेष्ठ हूँ।

तुने मुझे आग से बनाया है और हज़रत आदम (अ.स.) को मिट्टी से। तो जब मैं हज़रत आदम (अ.स.) से श्रेष्ठ हूँ तो मैं हज़रत आदम (अ.स.) को प्रणाम क्यो करुँ।

● ईश्वर को इबलीस का घमंड अच्छा न लगा और ईश्वर ने इबलीस को धिक्कारते हुए स्वर्ग से निकाल दिया।

● जब इबलीस की सारी तपस्या नष्ट हो गई और वह धिक्कारा गया तो वह और घमंड में आकर ईश्वर से बोला कि, ''तू अगर मेरी जीवन अवधि प्रलय तक बढ़ा दे, तो जिस मानव के लिए तुने मुझे धिक्कारा है मैं उस के सारे वंश को सीधे रास्ते से भटका दूगाँ। केवल तेरे धर्मनिष्ठ कुछ बंदे ही मुझ से बचे रहेंगे।''

ईश्वर ने कहा, ''मैं तुझे प्रलय तक समय

देता हूँ। मेरी प्रार्थना का मार्ग स्पष्ट है। उसे छोड कर जो भी तेरी राह चलेगा तो तुझे और उन सब को मैं नरक में डाल दूगाँ।''

● इब्लीस स्वर्ग से बाहर हो गया और हज़रत आदम (अ. स.) स्वर्ग में रहने लगे। मगर आप अकेलापन महसूस करते थे। इस लिए ईश्वर ने हज़रत आदम (अ. स.) के बायी पसली से हव्वा को उत्पन्न किया। और दोनों से कहा के स्वर्ग में रहो। मगर स्वर्ग के एक विषेश पेड़ के फल को मत खाना।

● इब्लीस जो कि हज़रत आदम (अ. स.) और हज़रत हव्वा (अ.स.) का शत्रु था, उस ने हज़रत हव्वा (अ.स.) तक यह बात किसी तरह पहुंचा दी की वह फल खाकर लोग अमर हो जाते हैं। इसलिए तुम दोनों वह फल जरुर खाना। हज़रत आदम (अ. स.) और हज़रत हव्वा (अ. स.) इब्लीस के बेहकावे में आ गए और उस फल को खाकर ईश्वर के आदेश को तोड़ दिया। जिस के कारण ईश्वर ने हज़रत आदम (अ. स.), हज़रत हव्वा (अ. स.) और इब्लीस सब को धरती पर उतार दिया।

● हज़रत आदम (अ. स.) और हज़रत हव्वा ने अपनी गलती के लिए ईश्वर से क्षमा मांगी तो ईश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया। मगर हज़रत आदम (अ. स.) और उन की संतान के लिए अपनी जिवनअवधि में अपने कर्मों द्वारा परीक्षा देना अनिवार्य रखा।

● धरती पर हज़रत आदम (अ. स.) श्रीलंका में, हव्वा मिना (मक्का के नज़दीक) में और इब्लीस ईराक में उतरा।

● श्रीलंका में श्री पद पहाड के उपर आज भी आदम के पैरों के निशान है। इसे आप युट्युब पर भी देख सकते हैं। (श्री पद का चित्र इस पुस्तक के कवर पेज पर आप देख सकते हैं।)

युट्युब लिंक
https://youtu.be/TJN_3iZo61E

● इस बात को नोट कीजिए की इन पैरों के निशान को ईसाई और मुसलमान हजरत आदम (अ. स.) के पैरों के निशान कहते है। और हिन्दू भाई शंकरजी के पैरों के निशान कहते है। वह इन्हें श्री राम जी या श्री कृष्ण जी के पैरों का निशान नही कहते है। तो हज़रत आदम और शंकरजी इन दोनों महापुरुषों में कुछ न कुछ समानताएं तो जरुर हैं।

● हव्वा की कबर आज भी मिना से ३० मील की दूरी पर जिद्दा शहर में है। जिसे आप युट्युब पर देख सकते है।

युट्युब लिंक-

https://youtu.be/yLQoeaxt8d4

● इस पुस्तक के आखरी कवर पेज पर Jeddah, Makkah, और Mina का Google map आप देख सकते है। इस नक्शे में आप Al-haram (Makkah) और Mina को एक दुसरे से करीब देख सकते हैं। Jiddah इस स्थान से केवल ७० Km समुद्र की ओर है।

● हजरत आदम (अ. स.) और हव्वा ने फल खाने की गलती कि थी। मगर ईश्वर से क्षमा मांगने पर ईश्वर ने आप दोनों को क्षमा कर दिया था। ईश्वर ने आप दोनों को धरती पर उतारा मगर आप दोनों इब्लीस की तरह धिक्कारे हुए न थे। बल्कि हज़रत आदम (अ. स.) ईश्वर के पहले पैगंबर थे। और फरिश्तों के माध्यम से आप सदा ईश्वर के सम्पर्क में रहे।

● ईश्वर ने मानवजाति को अपनी प्रार्थना के लिए पैदा किया था। काबे की परिक्रमा करना और हज करना यह ईश्वर की बड़ी प्रार्थना है। काबा धरती पर मानवजाति से पहले जिन्नों का भी प्रार्थना स्थल रहा है। तो हज़रत आदम (अ.स.) और हव्वा, ईश्वर की आज्ञा से और फरिश्तो के मार्गदर्शन में प्रार्थना के लिए अकेले मक्का गए और वही धरती पर दोनों की फिर मुलाकात हुई और दोनों वही मक्के में बस गए। धरती पर केवल मक्का को ही हरम का पवित्र स्थान कहा जाता है।

● हज़रत आदम (अ. स.) और हज़रत हव्वा (अ.स.) को दो बेटे हुए। जब वह बड़े हुए तो उन में विवाह के सम्बन्ध में विवाद हुआ। दोनों से ऐसा कहा गया की आप दोनों ईश्वर को भेट प्रस्तुत करो। ईश्वर जिस की भेट स्वीकारेगा वही सत्य मार्ग पर हैं ऐसा समझा जाएगा। छोटे बेटे की भेट को ईश्वर ने स्वीकार किया, मगर बड़ा बेटा काबील जो पहले से ही असत्य के मार्ग पर था वह अपनी जिद पर अड़ा रहा और छोटे भाई हाबील का वध कर दिया।

● हमने आदम (अ. स.) और हव्वा (अ. स.) की कहानी को संक्षिप्त में और आसान शब्दो में वर्णन किया है। कुरआन और बाईबल में हज़रत आदम (अ. स.) और हज़रत हव्वा (अ. स.) का विस्तार से वर्णन है। इस अध्याय में हजरत आदम (अ. स.) और शंकरजी में समानता वाली जो सात बातें है, केवल उन्हीं के बारे में जो कुरआन की आयतें है वह हम यहाँ बयान करते है।

१) आदम (अ. स) का बिना माता के अस्तित्व में आना

२) आदम (अ.स) के शरीर से हव्वा (अ. स) का उत्पन्न होना

लोगों, अपने रब से ड़रो जिसने तुम को एक जान से पैदा किया और उसी जान से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत मर्द और औरत दुनिया में फैला दिए। (पवित्र कुरआन ४:१)

३) इब्लीस का आदम (अ.स) को आदर न करना

हमने तुम्हारी संरचना का आरंम्भ किया, फिर तुम्हारा रुप बनाया, फिर फरिश्तों से कहा आदम को सज्दा करो। इस आदेश पर सब ने सज्दा किया मगर इब्लीस सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ।

(पवित्र कुरआन ७:११)

४) इब्लीस का धिक्कारा जाना

रब ने पूछा, ''ऐ इब्लीस, तुझे क्या हुआ कि तूने सज्दा करनेवालों का साथ न दिया?'' उसने कहा, मरो यह काम नही है कि मैं उस इन्सान को सज्दा करुँ जिसे तूने सड़ी हुई मिट्टी के सूखे गारे से पैदा किया है।'' रब ने कहा, अच्छा तो निकल जा यहाँ से, क्योंकि तू फिटकारा हुआ मरदूद है, और अब कयामत के दिन तक तुझपर फिटकार है।'' उसने कहा, मेरे रब, यह बात है तो फिर मुझे उस दिन (कयामत) तक के लिए मोहलत दे, जबकि सारे इन्सान दुबारा उठाए जाएँगे।'' कहा, ''अच्छा, तुझे मोहलत है उस दिन तक जिसका समय हमें मालूम है।

(पवित्र कुरआन १५:३२-४२)

५) आदम (अ.स) और हव्वा (अ.स) का धरती पर आना

इस तरह धोखा देकर वह उन दोनों को धीरे-धीरे अपने ढब पर ले आया। आख़िरकार जब उन्होंने उस पेड़ का मज़ा चखा तो उनकी गुप्त इन्द्रियाँ एक दूसरे के सामने खुल गई और वे अपने शरीरों को जन्नत के पत्तों से ढंकने लगे। तब उनके रब ने उन्हें पुकारा, ''क्या मैंने तुम्हें इस पेड़ से न रोका था और न कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है? दोनो बोल उठे, ''ऐ रब, हमने अपने ऊपर जुल्म किया, अब अगर तूने हमें माफ न किया और दया न की तो यक़ीनन हम तबाह हो जाएँगे।'' कहा, ''उतर जाओ, तुम एक दूसरे के दुश्मन हो, और तुम्हारे लिए एक निश्चित अवधि तक ज़मीन में ठहरने की जगह और जीवन सामग्री है।'' और कहा, ''वहीं तुमको जीना और मरना है और उसी में से तुमको आख़िरकार निकाला जाएगा।'

(पवित्र कुरआन ७:२२-५५)

६) आदम (अ.स) का मक्का में रहना

निसंदेह सबसे पहला उपासनागृह इबादतगाह जो इन्सानों के लिए निर्मित हुआ वह वही है जो मक्का में स्थित है। उसको भलाई और बरकत दी गई थी और सारे संसार वालों के लिए मार्गदर्शन केन्द्र बनाया गया था। (पवित्र कुरआन ३:९६)

● धरती पर हज़रत हव्वा (अ.स.) मिना में उतरी। मिना यह मक्का से ५ Km की दूरी पर वह जगह है जहाँ हाजी हज के अवसर पर तीन दिन तंबू (Tent) में रहते है। यह जगह दो पहाडों के बिच की वादी (Valley) है। मक्का में काबा भी आठ पहाड़ों से चारों तरफ से घिरा हुआ है।

ईश्वर की प्रार्थना और काबा की परीक्रमा करने हज़रत आदम (अ. स.) और हज़रत हव्वा (अ. स.) फरिश्तों के मार्गदर्शन में मक्का गए। वही अरफात के मैदान में (जहाँ हज होता है) आप दोनों की धरती पर फिर भेट हुई। और आप दोनों वही बस गए। आज भी हज़रत हव्वा (अ. स.) की कबर मक्का से केवल ७० Km के अंतर पर जिद्दा में है।

मिना, अरफात, मक्का और जिद्दा एक दूसरे से करीब करीब है। इन चारों को आप नक्शे में देख सकते है जो इस पुस्तक के आखरी कवर पेज पर है।

● काबा के पास 'ज़मज़म' नाम का एक झरना है जिस में से रोज़ लाखो लिटर पानी निकालते है।

७) काबील और हबील का वर्णन।

और तनिक उन्हें आदम के दो बेटों का किस्सा भी बिना कमी-वेशी के सुना दो। जब उन दोनों ने कुरबानी की तो उनमें से एक की कुरबानी कबूल की गई और दूसरे की न की गई। उसने (काबील) ने कहा: ''मैं तुझे मार डालूंगा।'' उसने (हाबील) जवाब दिया: ''अल्लाह परहेज़गार लोगों की ही नज़्रें (भेट) कबूल करता है। अगर तू मुझे कत्ल करने के लिए हाथ उठाएगा तो मैं तुझे कत्ल करने के लिए हाथ न उठाऊँगा। मैं, अल्लाह, सारे संसार के रब से डरता हूँ। मैं चाहता हँ कि मेरा और अपना गुनाह तू ही समेट ले और दोज़खी बन कर रहे। ज़ालिमों के जुल्म का यही ठीक बदला है।'' आखिरकार उसके जी ने अपने भाई का कत्ल उसके लिए आसान कर दिया और वह उसे मार कर उन लोगों में शामिल हो गया जो घाटा उठाने वाले हैं। (पवित्र कुरआन ५:२७-३१)

नोट : कुरआन की इन आयतों को पढ़ कर आप एक बात नोट करें की ईश्वर का आदेश या वाणी, इब्लीस, हज़रत आदम (अ.स.), और हज़रत हव्वा (अ.स.) सब ने सुनी है। मगर किसी ने ईश्वर को देखा नहीं है। केवल ईश्वर की वाणी या **आकाशवाणी** को ही सब सुनते रहे।

****

अध्याय-१०
दक्ष घटना का विश्लेषण-भाग-१

● जिस समय सती देवी ने अपने देह को त्यागा था उस समय आकाशवाणी ने शंकरजी की प्रशंसा में यह शब्द कहें थे।

जगत्पिता शिवः शक्तिर्जगन्ता च सासती। सत्कृतौ न त्वया मूढ! कथं श्रेयो भविष्यति।२५।
(शिव पुराण, रुद्रसंहिता, सती खण्ड-२, अध्याय-३१, पेज नं-४०९, श्लोक-२५)

शिव एवं सती इस जगत् के माता-पिता हैं। हे मूढ़! तुमने उनका सत्कार नहीं किया, अत: किस प्रकार तुम्हारा कल्याण होगा?

● इन शब्दों से यह स्पष्ट है की यह वाणी शंकरजी की नही थी। उस समय शंकरजी कैलाश पर्वत पर थे।

न यह आवाज दुर्गा देवी की थी। क्योंकि सती देवी दुर्गा देवी का अवतार हैं। अगर यह आवाज (आकाशवाणी) दुर्गा देवी की होती तो इस श्लोक में सती देवी के नाम के बदले ऐसा कहा गया होता के ''मैं और शिव इस जगत के माता पिता हैं।'' मगर श्लोक में ऐसा नहीं कहा गया है।

● आकाशवाणी ने इन शब्दों में बह्मा और विष्णु को सम्बोधित किया था।

● निर्गच्छ त्वं हरे शीघ्रमेतध्वरमण्डपात् । अन्यथा भवतो नाशो भविष्यत्यद्य सर्वथा।३४।

● हे विष्णो! तुम भी इस यज्ञ मण्डप से बाहर चले जाओ, अन्यथा तुम्हारा भी विनाश हो जायेगा। ३४।

● निर्गच्छ त्वं विधे! शीघ्रमेतदध्वरमण्डपात् । अन्यथा भवतो नाशो भविष्यत्यद्य सर्वथा।३५।
(शिव पुराण, रुद्रसंहिता, सती खण्ड-२, अध्याय-३१, पेज नं-४०९, श्लोक-३५)

हे विधाता (ब्रह्मा), तुम शीघ्र इस स्थान से बाहर हो जाओ, अन्यथा तुम्हारा सर्वथा नाश हो जायेगा।।३५।।

● समाज में ऐसा विश्वास है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश यह एक ही ईश्वर के तीन नाम है। मगर इस दक्ष की घटना का वर्णन पढ़कर ऐसा एहसास होता है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन तिनो का अपना अस्तित्व है। और आकाशवाणी या ईश्वर सब से शक्तिशाली और अलग है।

अधिक जानकारी के लिए हम ब्रह्मा, विष्णु और आकाशवाणी का कुछ और परिचय पढ़ते है।

****

अध्याय-११
ब्रह्माजी का परिचय

● शिव पुराण में हमें ब्रम्हा जी के बारे में निम्नलिखित वर्णन प्राप्त हुआ है।

ब्रह्मा जी के जन्म का वर्णन

शिव पुराण में ब्रह्माजी के जन्म के बारे में निम्नलिखित श्लोक है-

● *स मायामोहितं कृत्वा मां महेशो द्रुतं मुने!। तन्नाभिपङ्कजादाविर्भावयामास लीलया।।५।*

(ब्रह्माजी ने कहा,) उन्होंने ही पुनः मुझे माया से मोहित कर उस विष्णु के नाभिकमल से मुझे उत्पन्न किया।।५।
(शिवपुराण, रुद्रसंहिता (सृष्टिखण्ड:१), अध्याय-७, श्लोक-५, पेज नं. २०३)

● *एवं पद्मात्ततो जज्ञे पुत्रोऽहं हेमगर्भकः। चतुर्मुखोक्तवर्णस्त्रिपुण्ड्राङ्कितमस्तकः।६।*

इस प्रकार उस नाभिकमल से हिरण्यगर्भ चारमुख युक्त, मस्तक पर त्रिपुण्ड्र धारण किये हुए मैं विष्णु का पुत्र बनकर उत्पन्न हुआ।
(शिवपुराण, रुद्रसंहिता (सृष्टिखण्ड:१), अध्याय-७, श्लोक-६, पेज नं. २०३)

● *तन्मायामोहितश्चाऽहं नाविदं कमलं विना। स्वदेहजनकं तात! पितरं ज्ञानदुर्बलः।७।*

शिव की माया से मोहित होने के कारण मुझे कमल के अतिरिक्त और किसी भी वस्तु का ज्ञान नहीं था। उस समय मैं इतना ज्ञानहीन था कि मुझे अपने देह को उत्पन्न करनेवाले पिता का भी ज्ञान नहीं था।
(शिवपुराण, रुद्रसंहिता (सृष्टिखण्ड:१), अध्याय-७, श्लोक-७, पेज नं. २०३)

● *कोऽहं वा कुत आयातः किं कार्यं तु मदीयकम् । कस्य पुत्रोऽहमुत्पन्नः केनैव निर्मितोऽधुना।८।*

इस प्रकार के संशय से ग्रस्त था कि मैं कौन हूँ? मुझे किसने बनाया है, मैं कहाँ आया हूँ और मेरा क्या कार्य है? मैं किसका पुत्र हूँ?
(शिवपुराण, रुद्रसंहिता (सृष्टिखण्ड:१), अध्याय-७, श्लोक-८, पेज नं. २०३)

● *तदा वाणी समुत्पन्ना तपेति परमा शुभा। शिवेच्छयाऽपरा व्योम्नो मोहविध्वंसिनी मुने! ।१५।*

उस समय परमकल्याणकारिणी **आकाशवाणी** हुई कि हे ब्रह्मन् ! तुम तप करो। हे महामुने! उस **आकाशवाणी** को सुनकर मेरा मोह नष्ट हो गया।
(शिवपुराण, रुद्रसंहिता (सृष्टिखण्ड:१), अध्याय-७, श्लोक-१५, पेज नं. २०४)

● *तच्छ्रुत्वा व्योमवचनं द्वादशाब्दं प्रयत्नतः। पुनस्तप्तं तपो घोरं द्रष्टुं स्वजनकं तदा।१६।*

तदनन्तर उस आकाशवाणी को सुनकर पिता के दर्शन की लालसा से मैंने बारह वर्ष तक घोर तप किया।

(शिवपुराण, रुद्रसंहिता (सृष्टिखण्ड:१), अध्याय-७, श्लोक-१६, पेज नं. २०४)

ब्रह्मा को दिए गए दण्ड का वर्णन :-

● *ससर्जाऽथ महादेवः पुरुषं कञ्चिदद्भुतम् भैरवाख्यं भ्रुवोर्मध्याद् ब्रह्मदर्पजिघांसया।१।*

फिर देवाधिदेव महादेवजी ने ब्रह्मा के घमण्ड को चूर करने के लिए अपने भौंहों के मध्य भाग से एक अद्भुत महाभयानक भैरव पुरुष की सृष्टि की।

(शिवपुराण, विद्येश्वरसंहिता, अध्याय-८, श्लोक-१, पेज नं. ७७)

● *स वै तदा तत्र पतिं प्रणम्य शिवमङ्गणे। किं कार्यं करवाण्यत्र शीघ्रमाज्ञापय प्रभो!।२।*

उस पुरुष ने उस युद्ध स्थल में अपने स्वामी शिवजी को नमस्कार कर कहा-हे प्रभो ! मैं कौन सा कार्य करुँ? शीघ्र ही आज्ञा प्रदान कीजिए ।

(शिवपुराण, विद्येश्वरसंहिता, अध्याय-८, श्लोक-२, पेज नं. ७७)

● *वत्स योऽयं विधिः साक्षाज्जगतामाद्यदैवतम्। नूनमर्चय खड्गेन तिग्मेन जवसा परम् ।३।*

(शिवजी ने कहा) यह ब्रह्मा जो इस जगत् का साक्षात् देवता है, उसकी इस लपलपाती हुई तलवार के तीक्ष्ण धार से पूजा करो।

(शिवपुराण, विद्येश्वरसंहिता, अध्याय-८, श्लोक-३, पेज नं. ७७)

● *स वै गृहित्वैककरेण केशं तत्पञ्चमं दृप्तमसत्यभाषणम् ।*
छित्वा शिरांस्यस्य निहन्तुमुद्यतः प्रकम्पयन् खड्गमतिस्फुटं करैः।४।

यह सुनते ही भैरव ने एक हाथ से ब्रह्मा का केश पकड़ उनका असत्य भाषी पाँचवाँ सिर काट कर अपनी फड़कती हुई तलवार से उनके और सिरों को काटना चाहा।

(शिवपुराण, विद्येश्वरसंहिता, अध्याय-८, श्लोक-४, पेज नं. ७७)

● पिता तवोत्सृष्ट-विभूषणाम्बर-स्रगुत्तरीयामलकेशसंहितः ।
प्रवातरम्भेव लतेव चञ्चलः पपात वै भैरवपादपङ्कजे ।५।

तब ब्रह्मा भूषण, वस्त्र, माला तथा उत्तरीय का त्याग कर बिखरे हुए केशों से वायु के झोंके द्वारा केले तथा लता समान थर-थर काँपते हुए भैरव के चरणों पर गिर पड़े।

(शिवपुराण, विद्येश्वरसंहिता, अध्याय-८, श्लोक-५, पेज नं. ७७)

****

अध्याय- १ २
विष्णु और तुलसी की कहानी

विष्णु का स्वभाव

देवतावों के स्वभाव के बारे में शिव पुराण में निम्नलिखित उल्लेख है।

- *विष्णुः सत्त्वं रजोऽहं च तमो रुद्र उदाहृतः। लोकाचारत इत्येवं नामतो वस्तुतोऽन्यथा ।३८।*

(ब्रह्माजी ने कहा,)
विष्णु सत्त्व के प्रतीक, रजोगुण का प्रतीक मैं (ब्रह्मा) तथा तमोगुण के प्रतीक रुद्र (शंकरजी) हैं। लोकाचार से ऐसा व्यवहार किया जाता है, किन्तु नाम के कारण वस्तुतः तत्त्व इससे सर्वथा भिन्न है।

- *अन्तस्तमो बहिः सत्त्वो विष्णू रुद्रस्तथा मतः। अन्तः सत्त्वस्तमो बाह्यो रजोऽहं सर्वथा मुने!।३९।*

विष्णु भीतर से तमोयुक्त और बाहर से रजोगुण से युक्त हैं। रुद्र भीतर से सत्त्वगुण एवं बाहर से तमोगुण युक्त हैं। किन्तु हे मुने! मैं तो भीतर और बाहर दोनों से रजोगुण युक्त हूँ।

- *राजसी च सुरा देवी सत्त्वरुपात् तु सा सती। लक्ष्मीस्तमोमयी ज्ञेया त्रिरुपा च शिवा परा।४०।*

इसी प्रकार देवियों में भी रजोगुण युक्त सुरा देवी है, सत्त्वस्वरुपा सती देवी है। और लक्ष्मी तमोगुण से युक्त हैं।
(शिवपुराण, रुद्रसंहिता (सृष्टिखण्डः१), अध्याय-१६, श्लोक ३८-४०, पेज नं. २५२)

विष्णु और शंखचुड राक्षस कि कहानी

- *वृद्धाब्राह्मणवेषेण विष्णुर्मायाविनां वरः । शख्ङचूडोपकण्ठं च गत्वोवाच स तं तदा।।१५।।*

उनकी आज्ञा से माया जानने वालों में सर्वश्रेष्ठ विष्णु, वृद्ध ब्राह्मण का रुप बनाकर शंखचूड के पास जाकर बोले।

- *देहि भिक्षां दानवेन्द्र! मह्यं प्राप्ताय साम्प्रतम् ।१६।*

हे दानवेन्द्र! मैं भिक्षा के लिए तुम्हारे पास आया हूँ, तुम मुझे भिक्षा प्रदान करो।

- *नेदानीं कथयिष्यामि प्रकटं दीनवत्सलम् । पश्चात्त्वां कथयिष्यामि पुन सत्यं करिष्यसि ।१७।*

यद्यपि तुम दीनदयालु हो, किन्तु मैं इस समय उसे स्पष्ट नहीं करुंगा, प्रतिज्ञा करने के बाद मैं तुमसे कहूँगा तब उसे देकर तुम अपनी प्रतिज्ञा सत्य करना।

- *ओमित्युवाच राजेन्द्र प्रसन्नवदनेक्षणः। कवचार्थी जनश्चाऽहमित्युवाचेति सच्छलात् ।१८।*

राजा ने बड़ी प्रसन्नता से देने की प्रतिज्ञा की। तब वृद्ध ब्राह्मण ने छल से कहा कि, मैं आपका कवच चाहता हूँ।

- *तच्छुत्वा दानवेन्द्रोऽसौ ब्रह्मण्यः सत्यवाग् विभुः । तद्ददौ कवचं दिव्यं विप्राय प्राण सम्मतम् ।१९।*

दानवेन्द्र ब्राह्मण-भक्त तथा सत्यभाषी तो था ही, उसने प्राणों के समान अपना प्यारा कवच ब्राह्मण को दे दिया।

- *माययेत्थं तु कवचं तस्माज्जग्राह वै हरिः। शङ्खचूडस्य रुपेण जगाम तुलसीं प्रति।२०।*

इस प्रकार विष्णु माया से कवच लेने के बाद शंखचूड का रुप धारण कर तुलसी के पास गये।

विष्णु और तुलसी की कथा

तुलसी के पास जाकर विष्णु जी ने शंखचुड के रुप में कहा की मैं देवताओं पर विजय प्राप्त करके आया हूँ। और फिर वह तुलसी के बिस्तर पर लेट गए।

- *इत्युक्तवा जगतां नाथः शयनं च चकार ह। रेमे रमापतिस्तत्र रमया स तया मुदा।२८।*

इस प्रकार जगत्पति रमानाथ ने तुलसी के साथ शयन किया और परम प्रसन्नता से उसके साथ विहार किया।

- *सा साध्वी सुखसम्भावाकर्षणस्य व्यतिक्रमात्। सर्वं वितर्कयामास कस्त्वमेवेत्युवाच सा।।२९।।*

किन्तु उस साध्वी ने रतिकाल में आकर्षण का व्यतिक्रम देख तर्क द्वारा सारी बातें जान ली और बोली, तू कौन है?।२९।

- *को वा त्वं वद मामाशु भुक्ता हं मायया त्वया। दूरीकृतं यत्सतीत्वमथ त्वां वै शपाम्यहम् ।।३०।।*

तुम शीघ्र बोलो कौन हो? तुमने कपट से मेरे साथ संभोग किया और मेरे सतीत्व को नष्ट किया, अत: मैं अभी तुमको शाप देती हूँ। ।३०।

- *तुलसीवचनं श्रुत्वा हरिः शापभयेन च। दधार लीलया ब्रह्मन्! स्वमूर्तिं सुमनोहराम् ।३१।*

तुलसी का वचन सुनकर शाप के भय से विष्णु ने अत्यन्त मनोहर मूर्ति धारण कर ली। ।३१।

(शिवपुराण, रुद्रसंहिता (युद्धखण्ड:५), अध्याय-४१, श्लोक १५-३१, पेज नं. ९३५-९३६)

****

अध्याय- १ ३
आकाशवाणी का परिचय

● बाईबल (Exodus 3 NIV) में लिखा है कि जब हजरत मूसा मदायन से मिस्त्र (Egypt) जा रहे थे तो Sinai पहाड़ के उपर उन्हें रोशनी (Light) दिखाई दी। तो आप वहां आग लाने गए। मगर जब आप उस रोशनी के पास पहुंचे तो एक आकाशवाणी सुनाई दी के, ''ऐ मूसा में तुम्हारा खुदा हूँ। तुम इस समय तवा के पवित्र स्थान पर हो, इसलिए अपने जूते उतार दो। मैं तुम्हें इस्त्राईल समुदाय का पैगंबर (संदेष्टा) नियुक्त करता हूँ।''

यही बात कुरआन में सुरे नं २० आयत नं ११-१२ में भी लिखी हुई है।

तो आकाशवाणी यह ईश्वर की आवाज है।

अपने जन्म के बाद जब ब्रह्मा जी अपने जन्मदाता को जानना चाहा तो इसी आकाशवाणी ने आप का मार्गदर्शन किया था।

हजरत आदम, हजरत हव्वा और इब्लीस को जो भी आदेश प्राप्त हुए वेद सब आकाशवाणी के रुप में थे। किसी ने ईश्वर को अपनी आँखो से कभी नही देखा।

आकाशवाणी या ईश्वर का सबसे अधिक वर्णन हमें भगवदगीता में प्राप्त होता है। जो निम्नलिखित है।

भगवदगीता में ईश्वर के तिन गुणों का वर्णन है।

१) अजन्मा

२) अदर्शी

३) अविनाशी

इन तिनों गुणों से संबंधित श्लोक निम्नलिखित है।

अजन्मा (Unborn)**:-**

य: माम् अजम् अनादिम् च वेत्ति लोक महा-ईश्वरम् । असम्मूढ: स: मर्त्येषु सर्व-पापै: प्रमुच्यते ।।१०-३।।

(**य**) जो (**माम्**) मुझ को (**अजम्**) न पैदा होनेवाला, (**अनादिम्**) आरम्भ के बिना (**च**) और (**लोक**) सारे लोकों का (**महा**) महान (**ईश्वरम्**) शासक और मालिक (**वेत्ति**) मानता है । (**सः**) वह (**असम्मूढः**) मूर्ख और भटकने वाला नहीं है (**मर्त्येषु**) (और वह) मरने के बाद (**सर्व**) सारे (**पापैः**) पापों से (**प्रमुच्यते**) मुक्त भी

हो जाएगा।

जो मुझ को न पैदा होनेवाला, आरम्भ के बिना और सारे लोकों का महान शासक और मालिक मानता है। वह मूर्ख और भटकने वाला नहीं है (और वह) मरने के बाद सारे पापों से मुक्त भी हो जाएगा।

अदर्शी (Formless)**:-**

अव्यक्तम् व्यक्तिम् आपन्नम् मन्यन्ते माम् अबुद्धय:। परम् भावम् अजानन्तः मम अव्ययम् अनुत्तमम् ।।७:२४।।

(मम) मेरी **(परम्)** सब से श्रेष्ठ **(अव्ययम्)** परिवर्तित न होनेवाली **(अुत्तमम्)** और अविनाशी **(भावम्)** स्वभाव को **(अजानन्तः)** न जानकर, **(अबुद्धयः)** अल्पज्ञानी **(माम्)** मुझ **(अव्यक्तम्)** न दिखाई देने वाले को, **(व्यक्तिम्)** दिखाई देने वाली, **(आपन्नम्)**और दोषी वस्तु या मनुष्य **(मन्यन्ते)** मानते हैं।

मेरी सब से श्रेष्ठ परिवर्तित न होनेवाली और अविनाशी प्रकृति को न जानकर, अल्पज्ञानी मुझ न दिखाई देने वाले को, दिखाई देने वाली, और दोषी वस्तु या मनुष्य मानते हैं।

अविनाशि (Immortal) **:-**

- *अविनाशि तु तत् विद्धि येन सर्वम् इदम ततम् । विनाशम् अव्ययस्य अस्य न कश्चित् कर्तुम् अर्हति।२-१७।*

श्री कृष्ण जी ने कहा,

(तु) लेकिन (तत्) तुम उस ईश्वर को (अविनाशि) <u>अविनाशि</u> (विद्धि) समझो, (येन) जिस के द्वारा (इदम्) इस (संसार) सारे संसार (सर्वम्) का (ततम्) फैलाव है। (अस्य) इस (अव्ययस्य) अविनाशी ईश्वर का (विनाशम्) विनाश (कर्तुम) करने की (अर्हति) शक्ति (कश्चित) किसी में भी (न) नहीं है।

श्री कृष्ण जी ने कहा,
लेकिन तुम उस ईश्वर को <u>अविनाशी</u> समझो, जिस के द्वारा इस सारे संसार का फैलाव है। उस अविनाशी ईश्वर का विनाश करने की शक्ति किसी में भी नहीं है।

भगवद् गीता में ईश्वर के कुछ और गुणों का वर्णन भी है। जिन में से कुछ निम्नलिखित है।

ईश्वर एक है :-

- *तेषाम् ज्ञानी नित्य-युक्तः एक भक्तिः विशिष्यते । प्रियः हि ज्ञानिनः अत्यर्थम् अहम् सः च मम प्रियः ।।७-१७।।*

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की,
(तेषाम्) इन चारों में जो (ज्ञानी) ज्ञानी, (नित्य) धैर्य यानी सब्र के साथ <u>(एक) एक ईश्वर की</u> (भक्तिः) भक्ति में (युक्तः) लगा रहता है, (विशिष्यते) वह सब से श्रेष्ठ है, (हि) क्योंकि (ज्ञानिनः) इस ज्ञानी को (अहम्) मैं (अत्यर्थम्) सबसे अधिक (प्रियः) प्रिय हूँ (च) और (सः) वह भी (मम) मुझे (प्रियः) सबसे अधिक प्रिय है।

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की,
इन चारों में जो ज्ञानी, धैर्य यानी सब्र के

साथ एक ईश्वर की भक्ति में लगा रहता है, वह सब से श्रेष्ठ है, क्योंकि इस ज्ञानी को मैं सबसे अधिक प्रिय हूँ और मुझे वह भी सबसे अधिक प्रिय है।

ईश्वर महान है: -

- *बहूनाम् जन्मनाम् अन्ते ज्ञान-वान् माम् प्रपद्यते। वासुदेवः सर्वम् इति सः महा-आत्मा सु-दुर्लभः ।१९।*

(श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की,)
(इति) इसी तरह (अन्ते) मौत तक, (सर्वम्) सारे कर्मों को केवल (माम्) मेरे (प्रपद्यते) सहारे पर करनेवाले (वासुदेवः) वासुदेव यानी कृष्ण (सः) के जैसा (महा आत्मा) महान मनुष्य (बहुनाम) बहुत सारे (जन्मनाम्) पैदा होनेवाले मनुष्यों और (ज्ञान-वान्) ज्ञानीयों मे से (काई एक) (सु-दुर्लभः) अत्यन्त दुर्लभ है।

(श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की,)
इसी तरह मौत तक, सारे कर्मों को केवल मेरे (ईश्वर के) सहारे पर करनेवाले वासुदेव यानी कृष्ण के जैसा महान मनुष्य बहुत सारे पैदा होनेवाले मनुष्यों और ज्ञानीयों में से (कोई एक) अत्यन्त दुर्लभ है।
(अर्थात ईश्वर इतना महान है की श्री कृष्ण जैसे महापुरुष भी उस के सहारे जीवन व्यतीत करते है।)

****

भगवद् गीता का अनुवाद

इस पुस्तक (''शंकरजी और हजरत आदम (अ.स.) में समानताएं'') में भगवद् गीता के श्लोक का अनुवाद डॉ. साजिद सिद्दीकी का है। इस अनुवाद को प्रोफेसर हेमंत दत्तात्रेय खैरनार (मालेगाव कैम्प) और डॉ. रेखा व्यास (दिल्ली) ने सही कहा है, और इस की प्रशंसा की है। और इस अनुवाद को महाराष्ट्र शासन की ओर से पुरस्कृत किया है।
प्रॉफेसर हेमंत खैरनार (एम. ए. (सस्कृत), बी. एड. संस्कृत (अंग्रेजी), एम. एड. (संस्कृत), वेद विषय के लिए विश्वविद्यालय में प्रथम क्रमांक गोल्ड मेडल प्राप्त करने वाले) संस्कृत के प्रोफेसर है। उनकी अपनी संस्कृत की क्लासेस है।

डॉ. रेखा व्यास (M.A. (Sanskrit) Ph.d. (Delhi)) चारों वेदो की अनुवादिका एवं अठ्ठारह प्रकाशित पुस्तकों की लेखिका है।

डॉ. साजिद सिद्दीकी के भागवद् गीता के अनुवाद को महाराष्ट्र शासन ने इस पुरस्कार से सन्मानित किया है।

अध्याय- १४
दक्ष घटना का विश्लेषण- भाग- २

हमने ब्रम्हा, विष्णु, और शंकरजी का परिचय पढ़ा मगर भगवद् गीता में जो ईश्वर के तिन गुण बताए है (अजन्मा, अदर्शा और अविनाशी) इन में से दो गुण ब्रह्मा, विष्णु और महेश में नहीं है अर्थात तीनों ने जन्म लिया और तिनों दर्शी है या देखे जा सकते है। और केवल वह शक्ती जिसकी वाणी आकाश से आते हुए सुनाई देती है केवल उसी में ईश्वर के सभी गुण है। और वही महान ईश्वर है।

भगवद् गीता के अध्ययन से हमें यह भी पता चलता है की ईश्वर संसार की रचना, पालनपोषण और अन्त के लिए किसी पर निर्भर नहीं है। और यह तिनों काम वह खुद करता है। भगवद् गीता के वह श्लोक निम्नलिखित है।

निर्माण

● *सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिम् यान्ति मामिकाम् । कल्प-क्षये पुनः तानि कल्प-आदौ विसृजामि अहम् ।।९-७।।*

(श्री कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है) (कौन्तेय) हे कुन्तिपुत्र (अर्जुन)! (अहम्) मैंने (कल्प) ब्रह्मांड के (अदौ) आरम्भ में, (तानि) इन सारे मनुष्यों को (विसृजामि) निर्माण किया है (कल्प) और ब्रह्माण्ड के (क्षये) अंत यानी प्रलय के समय (मामिकाम) मेरी इच्छा से (प्रकृतिम्) ईश्वरीय प्रकृति के द्वारा (सर्वे) सारे (भूतानि) मनुष्य (पुनः) दुबारा (यान्ति) उठाए जाएँगे।

(श्री कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है की) हे कुन्ती के पुत्र (अर्जुन)! मैंने ब्रह्माण्ड के आरम्भ में, इन सारे (मनुष्यों) को निर्माण किया है और ब्रह्माण्ड के अंत यानी प्रलय के समय मेरी इच्छा से ईश्वरीय प्रकृति के द्वारा, सारे मनुष्य दुबारा (उठाए) जाएँगे।

● *स्वयम् एव आत्मना आत्मानम् वेत्थ त्वम् पुरुष-उत्तम। भूत-भावन भूत-ईश देव-देव जगत्-पते ।।१०-१५।।*

(अर्जुन ने कहा)
(एरा) निःसन्देह, (आत्मना) आप अपने (आत्मानम) आपको (स्वयम्) स्वयं (वेत्थ) जानते हैं (त्वम्) क्योंकी आप (१) (उत्तम) सब से श्रेष्ठ (पुरुषः) पुरुष हैं (२) (भूत) सारी निर्मित वस्तुओं के (भावन) निर्माता हैं (३) (भूत) सारी निर्मित वस्तुओं को (ईश) पालने वाले रब और शासक हैं (देव) सारे देवताओं के (देव) शासक व मालिक हैं (५) (जगत्) सारे ब्रह्मांण्ड के (पते) भी शासक हैं।

अर्जुन ने कहा, निसन्देह, आप अपने आपको स्वयं जानते हैं क्योंकि आप (१) सबसे श्रेष्ठ पुरुष हैं (२) सारी निर्मित वस्तुओं के निर्माता हैं (३) सारी निर्मित वस्तुओं को पालने वाले रब और शासक हैं (४) सारे देवताओं के शासक व मालिक हैं (५) सारे ब्रह्मांण्ड के भी शासक हैं।

पालनपोषण

- *मया ततम् इदम् सर्वम् जगत् अव्यक्त-मूर्तिना। मत्-स्थानि सर्व-भूतानि न च अहम् तेषु अवस्थितः ।।९-४।।*

श्री कृष्ण ने कहा ईश्वर कह रहा है की,
(मया) मेरी (अव्यक्त) न दिखाई देने वाली (मूर्तिना) मूर्ति, (शरीर या रुप) के द्वारा, (इदम्) इस (सर्वम्) सारे (जगत्) संसार का (ततम्) फैलाव है। (सर्व) सारी (भूतानि) निर्मित वस्तुएँ (मत्) मुझ से (स्थानि) स्थित हैं (च) और (अहम्) मैं (तेषू) इनसे (अवस्थितः) स्थित (न) नहीं हूँ।

श्री कृष्ण ने कहा ईश्वर कह रहा है की,
मेरी न दिखाई देने वाली मूर्ति, शरीर या रुप के द्वारा, इस सारे संसार का फैलाव है। सारी निर्मित वस्तुएँ मुझसे स्थित हैं और मैं इनसे स्थित नहीं हूँ।

- *अनन्याः चिन्तयन्तः माम् ये जनाः पर्युपासते। तेषाम् नित्य अभियुक्तनाम् योग क्षेमम् वहामि अहम् ।।९-२२।।*

श्री कृष्ण ने कहा ईश्वर कह रहा है की,
(ये) जो (जनाः) मनुष्य, (अनन्या) किसी और (निर्मित वस्तु या देवता) को न (चिन्तयन्तः) सोचते हुए, मुझ (एक ईश्वर की) (पुर्यपासते) पूर्णतया भक्ति करते हैं। (तेषाम्) उन (नित्य) धैर्य के साथ (योग) भक्ति में (अभियुक्तनाम्) लगे हुए लोगों की आवश्यक वस्तुओं को देने की, (क्षेमम्) उनकी जान व धन की सुरक्षा की जिम्मेदारी (अहम्) मैं (वहामि) लेकर चलता हूँ।

श्री कृष्ण ने कहा ईश्वर कह रहा है की,
जो मनुष्य, किसी और निर्मित वस्तु या देवता को न सोचते हुए मेरी एक ईश्वर की पूर्णतया भक्ति करते हैं। उन धैर्य के साथ भक्ति में लगे हुए लोगों की आवश्यक वस्तुओं को देने की, उनकी जान व धन सुरक्षा की जिम्मेदारी मैं लेकर चलता हूँ।

अंतकरण

- *पुरुषः सः परः पार्थ भक्त्या लभ्यः तु अनन्यया। यस्य अन्तः-स्थानि भूतानि येन सर्वम् इदम् ततम् ।।८-२२।।*

श्री कृष्ण ने कहा,
हे (पार्थ) पार्थ अर्जुन! वह ईश्वर सः (पुरुषः) मनुष्य होने से परे है, परः (तु) लेकिन (अनन्यया) किसी और (निर्मित वस्तु या देवता) की भक्ति के बिना, (भक्त्या) उसकी भक्ति करने से ही (लभ्यः) उसे प्राप्त किया जा सकता है। (यह वह ईश्वर है) (येन) जिस के द्वारा (सर्वम्) सारी निर्मित वस्तुओं का (इदम्) यह (ततम्) फैलाव है और (यस्य) जिसके द्वारा (भूतानि) निर्मित वस्तुओं के (अन्तः)

अंत यानी प्रलय का (स्थानि) स्थित होना है।

श्री कृष्ण ने कहा,
हे पार्थ (अर्जुन)! वह ईश्वर मनुष्य होने से परे है, लेकिन किसी और (निर्मित वस्तु या देवता) की भक्ति के बिना, उसकी भक्ति करने से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। यह वह ईश्वर है जिसके द्वारा सारी निर्मित वस्तुओं का यह फैलाव है और जिसके द्वारा निर्मित वस्तुओं के अंत यानी प्रलय का स्थित होना है।

- *एतत् योनीनि भूतानि सर्वाणि इति उपधारय। अहम् कृत्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयः तथा।।७:६।।*

श्री कृष्ण ने कहा, ईश्वर कह रहा है की,
(इति) इसी तरह (एतत्) इन दोनों यानी संसार और अन्य लोक पर (सर्वाणि) सारी (भूतानि) मानवजाति की (योनीनि) पिढ़ीयों की सफलता और विफलता का (उपधारय) आधार भी है (च) और (अहम्) मैं (अकेला) (जगतः) संसार का (प्रभवः) आरम्भ (तथा) और (प्रलयः) इसका अंत यानी क़यामत (कृतस्नस्य) करने वाला हूँ।

श्री कृष्ण ने कहा, ईश्वर कह रहा है की,
इसी तरह इन दोनों यानी संसार और अन्य लोक पर सारी मानव जाति की पीढ़ियों की सफलता और विफलता का आधार भी है और मैं अकेला संसार का आरम्भ और इसका अंत यानी क़यामत करने वाला हूँ।

****

अध्याय-१५
भगवद् गीता के अनुसार ईश्वर कि प्रार्थना कैसे करें?

● *योगी युज्जीत सततम् आत्मानम् रहसि स्थितः। एकाकी यत-चित्त-आत्मा निराशीः अपरिग्रहः ।।६-१०।।*

श्री कृष्ण ने कहा, ईश्वर कह रहा है की,
(योगी) भक्त को चाहिए कि (युज्जीत) नियोजित समय के अनुसार भक्ति यानी एक ईश्वर में एकाग्रता के लिए, (१) (सततम्) सदैव (आत्मानाम्) अपने आप को (रहसि) शान्त जगह पर ले जाए और (एकाकी) एकांत वाली जगह में (स्थितः) स्थित होकर, (२) (आत्मा) अपने आप को (अपरिग्रहः) (निर्माता व शासक और) मालिक न मानकर, (निराशीः) किसी और निर्मित वस्तु की ओर आकर्षित हुए बिना, (३) (चित्तः) अपनी बुद्धि और सोच को (यतः) ईश्वर की याद में लगाए।

भक्त को चाहिए कि नियोजित समय अनुसार भक्ति यानी एक ईश्वर में एकाग्रता के लिए (१) सदैव अपने आप को शान्त जगह पर ले जाए और एकांत वाली जगह में स्थित होकर, (२) अपने आप को निर्मात व शासक और मालिक न मानकर, किसी और निर्मित वस्तु की ओर आकर्षित हुए बिना, (३) अपनी बुद्धि और सोच को ईश्वर की याद में लगाए।

● *शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरम् आसनम् आत्मनः । न अति नीचम् चैल-अजिन कुश उत्तरम् ।।६-११।।*

(शुचौ) पवित्र (देशे) धरती जो (न) न (अति) बहुत अधिक (उच्छ्रितम्) उंची हो और (न) न (अति) बहुत अधिक (नीचम्) नीची हो, उस पर (कुश) घास अथवा पतला (चैल) मुलायम वस्त्र अथवा (अजिन) मृगछाला (उत्तरम्) बिछाकर, (आत्मनः) अपने आप को (स्थिम्) मज़बूती से (प्रतिष्ठाप्य) स्थित करके (आसनम्) बैठ जाए।

पवित्र धरती जो न बहुत अधिक ऊंची हो और न बहुत अधिक नीची हो, उस पर घास अथवा पतला मुलायम वस्त्र अथवा मृगछाला बिछाकर, अपने आप को मज़बूती से स्थित करके बैठ जाए।

● *तत्र एक-अग्रम् मनः कृत्वा यत-चित्त इन्द्रिय क्रियः । उपविश्य आसने युज्जात् योगम् आत्म विशुद्धये ।।६-१२।।*

(तत्र) इस (आसने) आसन पर (उपविश्य) बैठकर, (चित्त) मन, (क्रियः) इच्छाओं और कर्मों को (यत्) वश में (कृत्वा) करके, (मनः) मन में केवल (एक) एक (अग्रम) सबसे श्रेष्ठ ईश्वर को रखते हुए (युज्जायात्) ईश्वर की प्रसन्नता (आत्म) और मन को बुरे कर्मों से (विशुद्धये) पवित्र करने के लिए (योगम्) भक्ति करे।

इस आसन पर बैठकर, मन, इच्छाओं और कर्मों को वश में करके, मन में केवल एक

सबसे श्रेष्ठ ईश्वर को (रखते हुए) ईश्वर की प्रसन्नता और मन को (बुरे कर्मों) से पवित्र करने के लिए भक्ति करे।

- *समम् काय शिरः ग्रीवम् धारयन् अचलम् स्थिरः। सम्प्रेक्ष्य नासिका अग्रम् स्वम् दिशः च अनवलोकयन् ।।६-१३।।*

(काय) शरीर, (शिरः) सर और (ग्रीवम्) गर्दन को (समम्) सीधा रखकर (अचलम्) मन को किसी (निर्मित वस्तु की ओर) न भटका कर, (स्थिर) एक ईश्वर की याद को करके, स्थिर (च) किसी भी (दिशः) दिशा में (अनवलोकयन्) न देखते हुए, (स्वम्) अपनी (नासिका) नाक के (अग्रम्) अगले भाग पर (सम्प्रैक्ष्य) देखते हुए,

शरीर, सर और गर्दन को सिधा रखकर मन को किसी निर्मित वस्तु की ओर न भटकाकर, एक ईश्वर की याद को स्थिर करके, किसी भी दिशा में न देखते हुए, अपनी नाक के अगले भाग पर देखते हुए,

- *प्रशान्त आत्मा विगत-भीः ब्रह्माचारि-व्रते स्थितः। मनः संयम्य मत् चित्तः युक्तः आसीत मत् परः ।।६-१४।।*

(प्रशान्त आत्मा) शान्त मन के द्वारा (विगत भीः) भय के बिना, (ब्रह्म) ईश्वर (चारि) के अनुसार जीवन व्यतीत करनेवाले (व्रते) की तरह (मनः) मन में (स्थितः) ईश्वर की श्रद्धा को स्थिर करके, (संयम्य) अपने आप को वश में रखते हुए, (मत्परः) मुझे ही सब से श्रेष्ठ मान कर, (मत्) मुझ में ही (चित्तः) अपनी बुद्धि और सोच को (युक्तः) लगाकार (आसीत्) बैठे।

शान्त मन के द्वारा, भय के बिना, ईश्वर के अनुसार जीवन व्यतीत करने वाले की तरह, मन में ईश्वर की श्रद्धा को स्थिर करके, अपने आप को वश में रखते हुए, मुझे ही सब से श्रेष्ठ मान कर, मुझ में ही अपनी बुद्धि और सोच को लगाकर बैठे।

- युज्जन् एवम् सदा आत्मानम् योगी नियत-मानसः। शान्तिम् निर्वाण-परमाम् मत्-संस्थाम् अधिगच्छति ।।६-१५।।

(एराम्) इस तरह (योगी) भक्त, (सदा) सदैव (आत्मानम्) अपने (मानसः) मन को (नियत) वश में रखकर, (युन्जन्) नियोजित समय अनुसार भक्ति करते हुए, (संसार में) (शान्तिम्) सच्ची शान्ति (और मरने के बाद) (मत्) मेरे (संस्थाम्) धाम (निर्वाण परमाम्) यानी स्वर्ग के सब से श्रेष्ठ शान्ति वाले धाम को (अधिगच्छति) पाता है।

इस तरह भक्त, सदैव अपने मन को वश में रखकर, नियोजित समय अनुसार भक्ति करते हुए, सच्ची शान्ति और मरने के बाद मेरे धाम यानी स्वर्ग के सब से श्रेष्ठ शान्ति वाले धाम को पाता है।

- *यम् लब्ध्वा च अपरम् लाभम् मन्यते न अधिकम् ततः। यस्मिन् स्थितः न दुःखेन गुरुणा अपि विचाल्यते।।६-२२।।*

(और फिर) (यम्) उस ईश्वर को (लब्ध्वा) प्राप्त करके, (उसकी तुलना में किसी) (अपरम्) दुसरी वस्तु को (च) और (अधिकम्) अधिक (लाभम्) लाभदायक (न) नहीं (मन्यते) मानता। (ततः) वह

ईश्वर, (यस्मिन्) जिस (की याद) को (एकाग्रता के द्वारा) (स्थितः) स्थित करके, (वह भक्त) (गुरुणा अपि) बड़े से बड़े (दुःखेन) दुःखो में भी (विचाल्यते) भटकता (न) नहीं है,

(और फिर) उस ईश्वर को प्राप्त करके, (उसकी तुलना में किसी) दूसरी वस्तु को और अधिक लाभदायक नहीं मानता। वह ईश्वर, जिस (की याद) को (एकाग्रता के द्वारा) स्थित करके, (वह भक्त) बड़े से बड़े दुःखों में भी भटकता नहीं है।

- *प्रशान्त मनसम् हि एनम् योगिनम् सुखम् उत्तमम् । उपैति शान्त-रजसम् ब्रह्म-भूतम् अकल्मषम् ।।६-२७।।*

(ही) क्योंकि (ब्रह्म) एक ईश्वर की (भक्ति करनेवाला) (भूतम्) मनुष्य (रजसम्) अपनी बुराई वाले गुण को (शान्त) दबा कर (अकल्मषम्) पापों से मुक्ती पा लेता है (एनम्) और फिर ऐसा (योगिनम्) भक्त (प्रशान्त) संतुष्ट (मनसम्) मन और (उत्तमम्) सर्वोच्च स्वर्ग के (सुखम्) सुख को (उपैति) प्राप्त करता है।

क्योंकि एक ईश्वर की भक्ति करने वाला मनुष्य अपनी बुराई वाले गुण को दबा कर पापों से मुक्ती पा लेता है और फिर ऐसा भक्त संतुष्ट मन और सर्वोच्च स्वर्ग के सुख को प्राप्त करता है।

******

लेखक क्यू.एस.खान ने हिंदू और मुस्लिम समुदाय के बिच गलत फहमी को दूर करने और समाज में प्रेम और सद्भावना बढ़ाने के उद्देश से कई पुस्तकें लिखी हैं। उनमें से तिन विशेष है।

१) पवित्र वेद और इस्लाम धर्म

२) भगवद् गीता में ईश्वर के आदेश

३) हज़रत मुहम्मद (स.) का परिचय

लेखक की यह और बहुत सारी पुस्तकें उन की वेबसाईट www.qskhan.com से मुफ्त डाउनलोड कर सकते है।

अध्याय- १६
भगवद् गीता के विशेष उपदेश

ईश्वर एक है

● *तेषाम् ज्ञानी नित्य-युक्तः एक भक्तिः विशिष्यते । प्रियः हि ज्ञानिनः अत्यर्थम् अहम् सः च मम प्रियः ।।७-१७।।*

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की, इन चारों में जो ज्ञानी, धैर्य यानी सब्र के साथ एक ईश्वर की भक्ती में लगा रहता है, वह सब से श्रेष्ठ है, क्योंकि इस ज्ञानी को मैं सबसे अधिक प्रिय हूँ और मुझे वह भी सबसे अधिक प्रिय है।

● *सर्व-धर्मान् परित्यज्य माम् एकम् शरणम् व्रज। अहम् त्वाम् सर्व पापेभ्यः मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।।१८-६६।।*

● श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की, अनेक ईश्वरों की उपासनाओं को छोड़कर, मुझ एक ईश्वर की शरण में आ जाओ। बहुत सारे ईश्वरों को छोड़ते समय चिन्ता मत करो, क्योंकि मैं तुमको सारे पिछले पापों से मुक्त कर दूँगा।

क्या प्रलय होगा?

एतत् योनीनि भूतानि सर्वाणि इति उपधारय। अहम् कृत्स्नस्य जमतः प्रभवः प्रलयः तथा ।७-६।

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की, (इति) इसी तरह (एतत्) इन दोनों यानी संसार और अन्य लोक पर (सर्वाणि) सारी (भूतानि) मानव जाति की (योनिनि) पिढ़ीयों की (सफलता और विफलता का) (उपधारय) आधार भी है (च) और (अहम्) मैं (अकेला) (जगतः) संसार का (प्रभवः) आरम्भ (तथा) और इसका (प्रलयः) अंत यानी क़यामत (कृतस्नस्य) करनेवाला हूँ।

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की, इसी तरह इन दोनों यानी संसार और अन्य लोक पर सारी मानव जाति की पीढ़ियों की सफलता और विफलता का आधार भी है और मैं अकेला संसार का आरम्भ और इसका अंत यानी क़यामत करने वाला हूँ।

● *पुरुषः सः परः पार्थ भक्त्या लभ्यः तु अनन्यया। यस्य अन्तः-स्थानि भूतानि येन सर्वम् इदम् ततम् ।८-२२।*

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की,
हे पार्थ (पार्थ) (अर्जुन)! (सः) वह ईश्वर (पुरुषः) मनुष्य होने से (परः) परे है, (तु) लेकिन (अनन्यया) किसी और (निर्मित वस्तु या देवता) की (भक्त्या) भक्ति के बिना, उसकी भक्ति करने से ही (लभ्यः) उसे प्राप्त किया जा सकता है। यह (वह ईश्वर है) (येन) जिस के द्वारा (सर्वम्) सारी निर्मित वस्तुओं का (इदम्) यह (ततम्) फैलाव है (यस्य) और जिसके द्वारा (भूतानि) निर्मित वस्तुओं के (अन्तः) अंत यानी प्रलय का (स्थानि) स्थित होना है।

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की,
हे पार्थ (अर्जुन)! वह मनुष्य होने से परे है, लेकिन किसी और (निर्मित वस्तु या देवता) की भक्ति के बिना, उसकी भक्ति करने से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। (यह वह ईश्वर है) जिसके द्वारा सारी (निर्मित वस्तुओं का) यह फैलाव है और जिसके द्वारा निर्मित वस्तुओं के अंत यानी प्रलय का स्थित होना है।

- *सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिम् यान्ति मामिकाम् । कल्प-क्षये पुनः तानि कल्प-आदौ विसृजामि अहम् ।।९-७।।*

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की,
(कौन्तेय) हे कुन्तिपुत्र (अर्जुन)! (अहम्) मैंने (कल्प) ब्रह्मांड के (अदौ) आरम्भ में, इन सारे (मनुष्यों) (तानि) को (विसृजामि) निर्माण किया है और (कल्प) ब्रह्माण्ड के (क्षये) अंत यानी प्रलय के समय (मामिकाम) मेरी इच्छा से (प्रकृतिम्) ईश्वरीय प्रकृति के द्वारा, (सर्वे) सारे (भूतानि) मनुष्य (पुनः) दुबारा (उठाए) (यान्ति) जाएँगे।

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की,
हे कुन्ती के पुत्र (अर्जुन)! मैंने ब्रह्माण्ड के आरम्भ में, इन सारे (मनुष्यों) को निर्माण किया है और ब्रह्माण्ड के अंत यानी प्रलय के समय मेरी इच्छा से ईश्वरीय प्रकृति के द्वारा, सारे मनुष्य दुबारा (उठाए) जाएँगे।

- उत्सीदेयुः इमे लोकाः न कुर्याम् कर्म चेत् अहम् । संकरस्य च कर्ता स्याम् उपहन्याम् इमाः प्रजाः ।३-२४।

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की,
(चेत्) अगर (अहम्) मैं (ब्रह्माण्ड को सही रखने का) (कर्म) कर्म (न) न (कुर्याम्) करुँ (इमे) तो इस (लोकाः) ब्रह्माण्ड में (उत्सीदेयः) बिगाड़ और अव्यवस्था हो जाएगी। (जब कि प्रलय यानी क़यामत के समय में ब्रह्माण्ड की सारी वस्तुओं को) (संकरस्य) कूड़ा, करकट की तरह टकरा कर मिला दूंगा (च) और फिर (प्रजाः) सब से पहले निर्मित किये जानेवाले मानव की (इमाः) इस सारी (पीढ़ी का) (उपहन्याम्) विनाश (कर्ता) करनेवाला (स्याम्) हो जाऊँगा।

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की,
अगर मैं ब्रह्माण्ड को सही रखने का कर्म न करुँ तो इस ब्रह्माण्ड में बिगाड़ और अव्यवस्था हो जाएगी। (जब की प्रलय यानी क़यामत के समय मैं ब्रह्माण्ड की सारी वस्तुओं को) कूड़ा करकट की तरह टकरा कर मिला दूंगा और फिर सब से पहले निर्मित किये जाने वाले मानव (१) प्रजा की इस सारी (पीढ़ी का) विनाश करने वाला हो जाऊंगा।

सारांश : अर्थात एक दिन प्रलय का होना अटल है।

प्रलय के दिन हमें अपने कर्मों का हिसाब देना होगा

- न आदत्ते कस्यचित् पापम् न च एरा सु-कृतम् विभुः। अज्ञानेन आवृतम् ज्ञानम् तेन मुह्यन्ति जन्तवः ।।५-१५।।

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की,

(ईश्वर जो) (भु) निर्मित वस्तुओं से (वि) पूर्णतया अलग है, वह (न) न (कस्यचित्) किसी के (सु-कृतम्) अच्छे कर्मों (च) और (पापम्) बुरे कर्मों का हिसाब लेने का (आदते) ज़िम्मेदार (न) है। (अज्ञानेन) अज्ञान्ता के कारण (एवं) नि:संदेह (जन्तव:) मनुष्य के (मुह्यन्ती) अहंकार और लोभ ने (तेन) उस के (ज्ञानम्) ज्ञान पर (आवृत्तम्) परदा डाल कर उस को छिपा दिया है।

(श्री कृष्ण ने कहा, ईश्वर कह रहा है की:)
(ईश्वर जो) निर्मित वस्तुओं से पूरे तौर पर अलग हैं, वह किसी के अच्छे कर्मों और बुरे कर्मों (का हिसाब लेने) का जिम्मेदार नहीं है। अज्ञ्यान्ता के कारण (मनुष्य ऐसा कहता है) क्योंकि नि:संदेह मनुष्य के अहंकार और लोभ ने उस के ज्ञान पर (परदा डाल) कर उस को छिपा दिया है।

अर्थात, ईश्वर मरने के बाद कर्मों का हिसाब भी लेगा।

अन्य लोक का अस्तित्व

● *अपरा इयम् इतः तु अन्याम् प्रकृतिम् विद्धि मे पराम् । जीव-भूताम् महा-बाहो यया इदम् धार्यते जगत् ।।७-५।।*

(श्री कृष्ण ने कहा, ईश्वर कह रहा है की:)
(तु) लेकिन, हे (महाबाहो) अर्जुन (ईयम्) इस (अपरा) अश्रेष्ठ संसार (इत:) के इलावा (प्रकृतिम्) मेरी प्रकृति की निशानी, (अन्याम्) अन्य लोक यानी आखिरत को भी (विद्धि) जानने का प्रयत्न करो, (मे) जो मेरी सब से श्रेष्ठ (प्रकृति की निशानी है), (यथा) जिस पर (जगत) इस संसार का और (इदम्) इस संसार की (जीव भूताम्) सारी निर्मित वस्तुओं की सफलता और विफलता का (धार्यत) आधार है।

लेकिन हे अर्जुन! इस अश्रेष्ठ संसार के इलावा मेरी प्रकृति की निशानी, अन्य लोक यानी आखिरत को भी जानने का प्रयत्न करो, जो मेरी सबसे श्रेष्ठ (प्रकृति की निशानी है,) जिस पर इस संसार का और इस संसार की सारी निर्मित वस्तुओं (की सफलता और विफलता का) आधार है।

● *ततः पदम् तत् परिमार्गितव्यम् यस्मिन् गीः न निवर्तन्ति भूयः। तम् एरा च आद्यम् पुरुषम् प्रपद्ये यतः प्रवृत्तीः प्रसृता पुराणी।१५-४।*

(श्री कृष्ण ने कहा, ईश्वर कह रहा है की:)
(तत्) फिर उस (अन्य यानी आखिरत के) (पदम्) धाम को (परिमार्गितव्यम्) खोजना चाहिए, (यस्मिन्) जहाँ (गता) जाकर कोई भी (भूय:) पुन: इस संसार में (निवर्तन्ति) वापस नहीं आता (च) और (जहाँ जाकर) (एवं) नि:सन्देह, (तम्) उसे (आद्यम्) उस सबसे पहले (पुरुषम्) पुरुष ईश्वर की (प्रपद्ये) शरण मिल जाती है। (यह अन्य धाम वह है) (यत) जिस के कारण (पुराणी) इस प्राचीन संसार का (प्रवृत्ति:) आरम्भ (प्रसृता) और फैलाव है।

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की,
फिर उस (अन्य यानी आखिरत के) धाम को खोजना चाहिए, जहाँ जाकर (कोई भी) पुन: (इस संसार में) वापस नहीं आता और (जहाँ जाकर) नि:सन्देह उसे उस सबसे पहले पुरुष (ईश्वर) की शरण मिल जाती है। (यह अन्य

धाम वह है) जिसके कारण इस प्राचीन संसार का आरम्भ और फैलाव है।

● *परः तस्मात् तु भावः अन्यः अव्यक्तः अव्यक्तात् सनातनः । यः सः सर्वेषु नश्यत्सु न विनश्यति।८-२०।*

(श्री कृष्ण ने कहा, ईश्वर कह रहा है की:)
(तु) लेकिन, (लोक) इस (परः) से परे (अन्यः) दूसरे लोक यानी आखिरत का (भाव) निर्माण है, (अव्यक्तात्) जो न दिखाई देने वालों से भी अधिक (अव्यक्तः) न दिखाई देने वाला है। (सनातनः) वह सदैव स्थित रहनेवाला भी है, (तस्मात्) इसलिए (यह अन्य लोक) (सः) वह निर्मित वस्तु है (यः) जो (सर्वेषु) सारी (भुतेषु) निर्मित वस्तुओं का (अश्यत्सु) नाश होने पर भी (विनश्यति) नष्ट (न) नहीं होगा।

● श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की,
लेकिन इस लोक से परे दूसरे लोक यानी आखिरत का निर्माण है, जो न दिखाई देने वालों से भी अधिक न दिखाई देने वाला है। वह सदैव स्थित रहने वाला भी है, इसलिए यह अन्य लोक वह निर्मित वस्तु है जो सारी निर्मित वस्तुओं का नाश होने पर भी नष्ट नहीं होगी।

● *अव्यक्तः अक्षरः इति उक्तः तम् आहुः परमाम् गतिम् । यम् प्राप्य न निवर्तन्ते तत् धाम परमम् मम ।।८-२१।।*

(कृष्ण ने कहा, ईश्वर कह रहा है की:)
(तम्) इस (अन्य लोक) को (ईश्वर) (अव्यक्तः) न दिखाई देने वाला (अक्षरः) और अविनाशी (उक्तः) कह रहा है। (इति) इस तरह (ईश्वर) (परमाम्) इसे सबसे श्रेष्ठ (गतिम्) मंजिल (आहुः) भी कह रहा है। (यम्) जिसे (प्राप्य) प्राप्त कर लेने के बाद (निवर्तन्ते) (मनुष्य संसार में) वापस (न) नहीं आते, (ईश्वर यह भी कह रहा है कि) (तत्) वह (अन्य लोक का) सबसे श्रेष्ठ धाम ही (मम) मेरे (धाम) रहने की जगह है।

● श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की,
लेकिन इस लोक से परे दूसरे लोक यानी आखिरत का निर्माण है, जो न दिखाई देने वालों से भी अधिक न दिखाई देने वाला है। वह सदैव स्थित रहने वाला भी है, इसलिए यह अन्य लोक वह निर्मित वस्तु है जो सारी निर्मित वस्तुओं का नाश होने पर भी नष्ट नहीं होगी।

सारांश :-

● ईश्वर एक है। (७:१७, १८:६६)

● एक दिन प्रलय का होना अटल है। (७:६, ८:२२, ९:७, ३:२४)

● प्रलय के दिन हमें अपने कर्मों का लेखा जोखा ईश्वर को देना होगा। (५:१५)

● प्रलय के बाद अन्य लोक के जिवन का आरंभ होगा। जिस की अवधी अनन्त है। जिस ने जैसे कर्म किए होंगे वह उस के अनुसार या तो वह स्वर्ग में या फिर वह नर्क में होगा। और इन्सान उसी स्थिती में हमेशा रहेगा।

****

अध्याय-१७
क्या भगवद् गीता में पुनर्जन्म की शिक्षा है?

● भगवद्गीता के निम्नलिखित श्लोक का क्या अर्थ है?

● हे अर्जुन! ईश्वर के धाम के आस पास जितने भी लोक हैं, वहाँ बार बार पैदा होने और मरने का चक्कर चलते रहता है, लेकिन हे कुन्तीपुत्र (अर्जुन)! (ईश्वर कह रहा है) मुझे पाने के बाद (स्वर्ग में) किसी का बार बार जन्म नहीं होता। (८:१६)

● ऐसे श्लोक की व्याख्या साधारण प्रकार से ऐसे की जाती है कि, जो लोग जीवन में पाप करते हैं, वह मृत्यु के बाद अपने पापों का दण्ड पाने के लिए इस धरती पर फिर जन्म लेते हैं। वह जीवन में फिर पाप करते रहते हैं और मरने के बाद फिर जन्म लेते रहते हैं। इस तरह उनके जीने मरने का सिलसिला उस समय तक चलता रहता है जब तक वह पुण्य करके अपनी आत्मा को पवित्र न कर लें। जब वह सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं तो मुक्ति पाकर ईश्वर में समा जाते हैं।

● ईश्वर में समा जाने की श्रद्धा या विश्वास रखने वाले अपने विश्वास को निम्नलिखित उदाहरण से समझाते हैं।

ईश्वर एक महान सागर कि तरह है। धरती पर जो कुछ पानी है वह सागर से बादल की तरह निकल कर बरसा हुआ पानी है। और धरती का पानी एक दिन फिर चक्र (Water Cycle) पूरी करके सागर में समा जाता है। इसी प्रकार हमारी आत्मा भी महान ईश्वर से निकली है और एक दिन पवित्र होकर और मुक्ति पाकर उसमें समा जाएगी।

● ऊपर लिखे गए पुनर्जन्म और ईश्वर में समाने के दो विश्वास या श्रद्धा कितने सच हैं, आइए हम इनका शोध करते हैं।

● भगवद्गीता के तीन श्लोक इस प्रकार हैं।

● मेरी न दिखाई देने वाली मूर्ति, शरीर या रुप के द्वारा, इस सारे संसार का फैलाव है। सारी निर्मित वस्तुएं मुझसे स्थित हैं और मैं इनसे स्थित नहीं हूँ। (९:४)

(नोट :- निर्मित वस्तुएं वह सारी चीज़े हैं जिसे ईश्वर ने निर्माण किया है। जैसे धरती आकाश, पशु, पक्षी, मानवजाति इत्यादि।)

● और मैं निर्मित वस्तुओं में स्थित नहीं हूँ

और निर्मित वस्तुएँ मुझमें स्थित नहीं हैं। सुबूत के तौर पर मेरी प्रकृति से जुड़ी हुई (निर्मित वस्तुओं) को देखो तो जानोगे कि मैं स्वयं सारी निर्मित वस्तुओं का अकेला निर्माता और सारी निर्मित वस्तुओं को पालने वाला हूँ। (९:५)

● हे कुन्ती के पुत्र अर्जुन! (ईश्वर कह रहा है) मेरी निर्माण करने वाली प्रकृति के आदेश से ही जानदार और बेजान वस्तुएं पैदा हो रही हैं। इसी कारण इस संसार या भूमि का परिवर्तन करना भी मेरी प्रकृति के वश में है। (९:१०)

● इन तीन श्लोकों से हमें जो शिक्षा मिलती है वह इस तरह है कि,

१) ईश्वर ने सबका निर्माण किया।

२) ईश्वर की आज्ञा और महिमा से ही सब मृत्यु और जीवन पाते हैं।

३) ईश्वर किसी में नहीं समाता है और न कोई ईश्वर में समाता है।

● तो यह विश्वास या श्रद्धा कि लोग अपनी आत्मा को पवित्र करके मुक्ति और मोक्ष पाकर ईश्वर में समा जाते हैं, यह भगवद्गीता की शिक्षा के अनुसार नहीं है।

● अब हम बार बार जीने और मरने के विश्वास या श्रद्धा पर शोध करते हैं। श्लोक नं.८:१६ में लिखा है कि ईश्वर के धाम के आसपास जितने भी लोक हैं वहाँ बार बार पैदा होने और मरने का चक्कर चलता रहता है।

ईश्वर का धाम कहाँ है?
ईश्वर का धाम स्वर्ग है।
स्वर्ग के आस पास क्या है?
हमारी धरती?
नहीं!
८४ लाख नरक! (गरुड़ पुराण-अध्याय ३ मन्त्र-६०)

स्वर्ग के चारो तरफ ८४ लाख नरक हैं। और स्वर्ग उनके बीच में एक ऊंची और फैली हुई जगह है।

● ऋग्वेद में स्वर्ग के बारे में यह श्लोक है।

"तुम वहाँ अपनी सच्चाई की सहायता से उस जगह को देखना जो अत्यन्त विस्तृत दृश्यों वाली है।" (ऋग्वेद १-२१-६)

● आचार्य सयान ने अपने वेदों की व्याख्या में इस विस्तृत स्थान को स्वर्ग कहा है।

● जैसे किसी मज़बूत दुर्ग के चारों तरफ गहरी खाई होती है इसी तरह स्वर्ग के चारों तरफ नरक की गहरी खाई है।

नरक की गहरी खाई के बारे में ऋग्वेद में यह वर्णन है।

''जो पापी हैं, उनके लिये यह अथाह गहराई वाला स्थान अस्तित्व में आया है। (ऋग्वेद ४-५-५)

आचार्य सयान ने अपने वेदों की व्याख्या में इस अथाह गहराई वाले स्थान को नरक कहा है।

(नोट:- गरुड़ पुराण अध्याय नं. ४ मन्त्र २ के अनुसार पापी एक नरक से दूसरे नरक में जाते हैं और कुल ८४ लाख नरक हैं। इसी को पुनर्जन्म में विश्वास रखने वाले ८४ लाख बार जन्म लेना कहते हैं।)

● गरुड़ पुराण के अनुसार नरक में पापी के शरीर को सांप निगल लेते हैं। या देवदूत पापी को ऊँचे पहाड़ से गिराते हैं। जिससे पापी का शरीर टुकड़े टुकड़े हो जाता है। या यमदूत उसे शस्त्र से काट काट कर टुकड़े टुकड़े कर देते हैं। तो जब एक बार शरीर यातना और दण्ड के लायक नहीं रहता है तो ईश्वर उस पापी को नया शरीर प्रदान करता है। ताकि यातनाएं और दण्ड देने का सिलसिला चलता रहे।

● श्लोक नं ८:१६ का यही उचित अर्थ है कि ईश्वर धाम के आसपास जो ८४ लाख नरक हैं वहाँ जीवन और मृत्यु का चक्कर चलता रहता है। और जो ईश्वर के धाम (स्वर्ग) को पा लेता है फिर उसे मृत्यु नहीं आती। क्योंकि स्वर्ग का जीवन अमर जीवन है। स्वर्ग में किसी की मृत्यु नहीं होगी।

● तो भगवद्गीता में जहाँ जहाँ इस तरह बार बार जीवन मृत्यु के बारे में लिखा है वह धरती पर नहीं बल्कि नरक के लिए लिखा है। तो भगवद्गीता में भी पुनर्जन्म की शिक्षा नहीं है।

● भगवद्गीता के श्लोक नं १५:४ से भी पुर्नजन्म के न होने की शिक्षा मिलती है। वह श्लोक इस प्रकार है

● फिर उस (अन्य धाम अर्थात् मृत्यु के बाद वाले) धाम को खोजना चाहिए, जहाँ जाकर कोई भी पुन: इस संसार में वापस नहीं आता और जहाँ जाकर नि:सन्देह उसे उस सबसे पहले पुरुष (ईश्वर) की शरण मिल जाती है। (यह अन्य धाम वह है) जिसके कारण इस प्राचीन संसार का आरम्भ और फैलाव है।

● महाराज विकासानन्द ब्रम्हचारी जी कहते हैं कि, पुनर्जन्म के बारे में सारे लेख पढ़ने के बाद और शोध करने के बाद जो बात समझ में आती है वह इस तरह है, कि महर्षि वेद व्यास जी हिन्दू धर्म के सबसे बड़े आचार्य हैं। आपने महाभारत और १७

पुराण लिखे। भगवद्गीता को भी पुस्तक का रुप आपने ही दिया था। पुर्नजन्म यह एक महत्त्वपूर्ण विश्वास या श्रद्धा है। अगर इसमें कुछ भी सच्चाई और वास्तविकता होती तो आप भी इस पर कुछ न कुछ जरुर लिखते। मगर आपने इस बारे में कुछ नहीं लिखा।

● छान्दोग्य उपनिषद और बृहदारण्यक उपनिषद के लेखक ऋषि ताण्ड और ऋषि याज्ञवल्कय यह महर्षि वेद व्यास जी के शिष्य थे। तो जो शिक्षा और विचार गुरु के होते हैं वही उसके शिष्यों के होते हैं। तो ऋषि ताण्ड और ऋषि याज्ञवल्कय भी पुनर्जन्म पर विश्वास रखने वाले न थे। उनके उपनिषदों में दोनों प्रकार के विचार हैं, और श्लोक हैं। अर्थात् उन के उपनिषदों में वेदों की शिक्षा के अनुसार पुनर्जन्म नहीं होने के भी श्लोक हैं। और वेदों की शिक्षा के विरुद्ध में पुर्नजन्म होने के भी श्लोक हैं। तो जो श्लोक वेदों के अनुसार पुनर्जन्म नहीं होने के श्लोक हैं वही लेखक के विचार हैं। और जो श्लोक पुर्नजन्म होने की शिक्षा देते हैं, वह लेखक के विचार नहीं हैं और वह बाद में उपनिषद में लिखे गए या मिलाए गए हैं। वह प्रक्षिप्त (Fabricated) हैं।

● एक उदाहरण से आप को यह बात समझ में आएगी के कैसे ग्रंथों में प्रक्षिप्त (मिलावट) कि जाती है।

● महाभारत की कथा में भीष्म पितामह का गम्भीर रुप से घायल होना और पुनर्जन्म के ड़र से अपने प्राण को सूर्य के उत्तर में आने तक रोके रखना यह एक बहुत प्रसिद्ध घटना है।

● महाराज विकासानन्द ब्रह्मचारी जी कहते है यह कथा महाभारत काव्य में बाद में मिलावट कि गई है।

● महाराज विकासानन्द जी लिखते हैं कि महाभारत के लेखक श्री वेद व्यास जी ने महाभारत महाकाव्य में बहुत सारे महापुरुषों के मृत्यु की घटना का वर्णन किया है। जैसे अभिमन्यु, द्रोणाचार्य, कर्ण इत्यादि। मगर श्री वेद व्यास जी ने स्वर्ग रोहण पर्व, अध्याय ५ मंत्र नं. २६-२७ में इन सभी को स्वर्ग प्राप्त हुआ ऐसा है। जब कि उस समय सूर्य दक्षिण में था। तो भीष्म पितामह को गम्भीर रुप से घायल होने के बाद भी बहुत दिनों तक शरशैय्या पर लेटे रहने का क्या कारण था? कोई कारण नहीं था।

● तो पुनर्जन्म यह पवित्र वेद और भगवद् गीता की शिक्षा नहीं है। और इसलिए किसी का भी पुनर्जन्म नहीं होगा।

मृत्यु के पश्चात अनंत जीवन की कल्पना :-

हम ने इस धरती पर जन्म लिया है तो मृत्यु जरुर होगी। उस मृत्यु के बाद ईश्वर हम को एक बार फिर जिवित करेगा और एक शरीर भी देगा। फिर प्रलय होगा। और हम अपने कर्मों का ईश्वर को हिसाब देंगे। अगर हमारे कर्म अच्छे हुए तो अनंत काल के लिए हमें स्वर्ग मिलेगा। और कर्म बुरे हुए तो अनंत साल तक नर्क में रहेंगे। इस मृत्यु के बाद वाले लोक को अन्य लोक कहते है। यह अनंत है। हमारे जिवन और अन्य लोक के जिवन को एक उदाहरण द्वारा समझने का प्रयास करते है।

कल्पना करो आप के हाथ में एक रस्सी है। उसका एक छोर आप के सिधे हाथ में है। और इस रस्सी की लम्बाई अनंत है। आप दुसरे हाथ से रस्सी की जो भी लम्बाई पकड़ सकते है यह आप का जिवन काल है।

सिधे हाथ से आरम्भ करें तो जो पहला हिस्सा है यह आपका धरती पर जन्म है। फिर उस के बाद का हिस्सा आप का बचपन फिर जवानी और अंत में आप के बाएं हाथ में रस्सी का हिस्सा आपकी मृत्यु है।

अब जो रस्सी का भाग बचा है यह आप के मृत्यु के बाद का जिवन है जो अनंत है। हमारी सारी मेहनत, फिकर, भागदौड बस उतने रस्सी के लिए होती है जो हमारे दोनों हाथ के बिच है। जब के हमको अधिक फिकर तो उस रस्सी की करनी चाहिए जो दोनों हाथों के बाहर और अनंत है। ईश्वर हमें बुद्धी दे के हम ईश्वर को, उस के नियम, को मृत्यु के बाद के जिवन को, और अन्य लोक को समझ सकें और उस में सफलता के लिए कर्म कर सकें।

****

Books written by Mr. Q.S. Khan			
Sr. No.	**Name of Book**	**Catagory**	**Book Type**
1.	**Design & Manufacturing of Hydraulic Presses**	Engineering	Printed and E-Book
2.	**Law of Success for both the worlds** (Translated in Hindi, Marathi)	Motivational	Printed and E-Book
3.	**Hajj journey problems & their easy solutions** (Translated in Hindi, Urdu, Gujarati, Bengali)	Religious	Printed and E-Book
4.	**How to prosper Islamic way?** (Translated in Hindi, Urdu)	Motivational	Printed and E-Book
5.	**Holy Vedas and Islam** (Translated in Hindi, Marathi, Gujrati, Kanada)	Religious	Printed and E-Book
6.	**Introduction of Prophet Muhammed** (Pbuh.) (Translated in Hindi, Marathi, Gujrati, Kanada, Bangali)	Religious	Printed and E-Book
7.	**Similarity between Shiv ji and Prophet Aadam** (a.s) (Translated in Hindi, Urdu)	Religious	Printed and E-Book
8.	**Prophets of Hindu Religion**	Religious	Printed and E-Book
9.	**Understanding Bhagwad Geeta in light of holy Quran** (In process)	Religious	
10.	**Bhagwad Geeta main Ishwar ke Aadesh** (Translated in Hindi, Urdu)	Religious	Printed and E-Book
11.	**Is Moon sighting necessary every month?** (Translated in Arabic, Urdu)	Religious	Printed and E-Book

Note :- Above mentioned all books could be freely downloaded form www.qskhan.com

-NOTE-

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

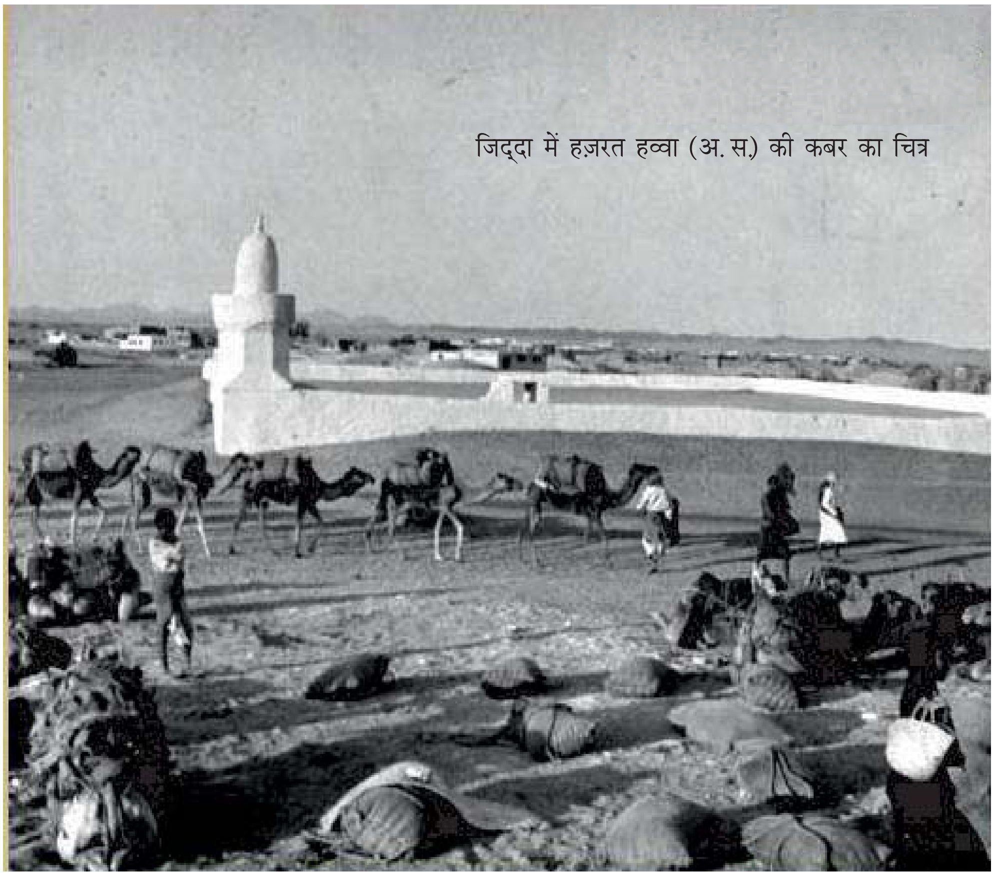

हज़रत हव्वा (अ.स.) मिना में स्वर्ग से उतरी।

हज़रत हव्वा (अ.स.) और हज़रत आदम (अ.स.) अरफात के मुकाम पर धरती पर मिले।

हज़रत हव्वा (अ.स.) और हज़रत आदम (अ.स.) ने मक्का में निवास किया।

Distance from Makkah to Jeddah 70 Km

ISBN NUMBER :
978-93-80778-41-9

PRICE : 40/-

Tanveer Publication
Hydro Electric Machinary Premises
A-12, Ram Rahim Udyog Nagar, Bus stop lane,
L.B.S Marg, Sonapur, Bhandup (West)
Mumbai- 400078
Phone - 022-25965930 Cell- 9320064026
E-mail- qsk1961@gmail.com
Website- **www.qskhan.com**